ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ

ॐ

।। श्री सतनाम साक्षी ।।

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

15 सितम्बर 2002

वार्षिक शुल्क : 50 रु. (भारत वर्ष में)
वार्षिक शुल्क : 350 रु. (विदेश में)

वर्ष **22** अंक **11**

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी ॐ श्री सतनाम साक्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ

।। श्री सत्नाम साक्षी ।।

प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में

सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का

106 वाँ जन्मोत्सव

15 अक्टूबर से 19 अक्टूबर , 2002

गंगा स्नान सत्संग पुनि – संतों का दर्शन।
कह टेऊँ आ सेवके – करिये मन प्रसन्न।।

समस्त सन्त–महात्मा–सज्जनों को सूचित किया जाता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य ब्रह्मश्रोत्रिय – ब्रह्मनेष्ठी **योगीराज श्री 1008 सद्गुरू स्वामी टेऊँराम** जी महाराज की छत्रछाया में प्रेम प्रकाश मण्डल के **त्याग तपस्या की साक्षात् मूर्ति सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 106 वाँ जन्मोत्सव** वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मंगलवार **15** अक्टूबर से शनिवार **19** अक्टूबर **2002** तक प्रेम प्रकाश आश्रम , हरिद्वार में **धूमधाम से मनाया जावेगा। आप सब इस जन्मोत्सव में आकर महापुरूषों की गुणगाथा को श्रवण करके मानव जीवन को कृतार्थ करें।**

कार्यक्रम

15 अक्टूबर, मंगलवार	प्रातः	7 से 8 सत्संग, 8 से 9 श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद्भगवद्गीता के पाठ आरंभ, 9 से 10 हवन, 10 बजे प्रेम प्रकाश ध्वज वन्दना, आरोहण,
	सायं	3 बजे शोभा यात्रा एवं 7 से 8 सत्संग
16 अक्टूबर, बूधवार से 18 अक्टूबर, शुक्रवार तक	प्रातः	7 से 11 एवं सायं 4 से 8 सत्संग
19 अक्टूबर, शनिवार	प्रातः	6 बजे गुरू पूजा, पोशाक पहरान, भोग आदि। 7 से 11 सत्संग , पाठों का पारायण व संत समागम
	सायं	4 से 8 सत्संग, दीप प्रज्वलन, पल्लव, उत्सव का समापन ।।

नोट : 1. सभी यात्री सर्दी योग्य बिस्तर, ताला, टार्च, एवं गिलास जरूर लावें।
2. सोना, गहना, व कीमती सामान न लावें।
3. कोई भी माता बहिन अपने पिता, भाई व पुरूष रिश्तेदार के सिवा अकेली न आवें।

शोभा यात्रा मार्ग : प्रेम प्रकाश आश्रम से खड़खड़ी , भीमगोड़ा,स्वामी टेऊँराम चौक, हरि की पौड़ी पर समाप्त।

सेवा में :
प्रेम प्रकाश मंडल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर–01
फोन : 0141 - 372424 , 372423
फैक्स : 0141 - 362424
e-mail : amrapur@ vsnl.com
website : premprakashpanth.com

पता :
सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
प्रेम प्रकाश आश्रम
भूपतवाला, हरिद्वार – 249410
फोन : 0133 - 460144 , 460815

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम–महिमाष्टक

श्लोकः– निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं; श्री टेऊँरामं शरणं प्रपद्ये।।1।।

अर्थः– शोक–रहित, मान–रहित, राग–द्वेष रहित, काम–रहित, ज्ञानाद्वैत–सूर्य, जगदानन्य–वन्दनीय, अध्यात्मलीन सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

श्लोकः– यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्; सिन्धो समीपेबत धर्म हानिम्।
जनान्च सर्वान व्यथितान विलक्ष्यः श्री टेऊँरामेण धृतोवतारः।।2।।

अर्थः–जिस समय देश में यवनों के प्रकोप से सिन्धु–समीप सनातन धर्म की हानि होने से सम्पूर्ण जनता विशेष दुखी होने लगी थी; उसी समय सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा–धाम पर अवतार धारण किया।

श्लोकः– सुरक्ष्य धर्मं त्वतीर्य भूमौ; प्रजासु व्याप्तन्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मंडल मंडितेन; प्रकाशितः प्रेम प्रकाश मार्गः।।3।।

अर्थः– सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा–धाम पर अवतार धारण करके प्रजा में व्याप्त विधर्मी–धर्म का विनाश करके, स्व धर्म की सुरक्षा करके, भूमि का उद्धार करके तथा प्रेम प्रकाश मार्ग का प्रकाशन करके भक्त–मंडल मंडित किया।

श्लोकः– अष्टांग योगे च समाहिताय; लोकोपकारे कृत निश्चयाय।
तद् ब्रह्म तत्त्वे परिनिष्ठताय; श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।4।।

अर्थः–जो अष्टांग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) में समाहित (लीन) रहने वाले, लोकोपकार का दृढ़ संकल्प धारण करने वाले तथा परमात्मा में पूर्ण परिनिष्ठत रहने वाले शिव–स्वरूप सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज को सादर नमस्कार है।

श्लोकः– शिष्टैश्च सर्वैः परिपूजितायः; स्वर्गाधिपतयेऽपि निःस्पृहाय।
कामादिषड्वर्ग जिताय तस्मै; श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।5।।

अर्थः–सम्पूर्ण गणमान्य पुरूषों द्वारा पूर्ण रूप से पूज्यमान, स्वर्गाधिपत्य–कामना से भी रहित तथा षड्वर्ग (काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर) को जीतने वाले शिव–स्वरूप सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज को सादर नमस्कार है।

श्लोकः– योगीन्द्रवृन्दैः परिसेविताय; भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठिताय; श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।6।।

अर्थः– योगीन्द्र वृन्दों से सम्यक सेव्यमानित, भक्तों के दुःख भंजन का दृढ़ संकल्प करने वाले सम्पूर्ण प्राणि समुदाय में आत्म–भावी निष्ठा रखने वाले शिव–स्वरूप सद्गुरू श्री टेऊँराम जी महाराज को सादर नमस्कार है।

श्लोकः– पूर्णेन्दु शोभा परिपूरिताय; शुद्धाय, शान्ताय गत स्पृहाय।
भस्मीकृताशेष निबन्धनाय; श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।7।।

अर्थः– शरद पूर्णमासी के निर्मल चन्द्रमा के समान शोभा से परिपूर्णित, शुद्ध, शान्त, स्पृहा (इच्छा) रहित, सम्पूर्ण भव–बन्धनों को पूर्ण रूप से जलाने वाले शिव–स्वरूप सद्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज को सादर नमस्कार है।

श्लोकः– भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय; प्रेम प्रकाश मंडलोद्भवाय।
आचार्य वर्यायवशेन्द्रियाय; श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।8।।

अर्थः–भक्त जनों के हितार्थित भक्ति मार्ग के निर्देशक, प्रेम प्रकाश मंडल के जन्माता इन्द्रियजित, परमाचार्य शिव–स्वरूप सद्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज को सादर नमस्कार है।

इति शुभम्। (श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर भावान्तरित तिलक) दिनांक 31.08.2002 (शनिवार)

श्री सदगुरू चरणारविन्द चंचरीक, सुरेश (सांवल) प्रेम प्रकाशी (मरैना)

धारावाहिक–2

आचार्य सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित

सोलह शिक्षाऐं (सिन्धी देवनागरी लिपि में अर्थ सहित)

बी-सिख्या

समस्त वेद पुराणों का सार 'सोलह शिक्षाऐं', आचार्य श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने
कल्याण के लिये अत्यन्त सरलतम भाषा में जगत के व्यवहारिक–पारमार्थिक जीवन के लिये 'स
शिक्षाओं' की रचना की। जो कि अपने आप में अद्भुत विलक्षण गूढ़ अर्थों को लिये हुए हैं, एक-
अक्षर, एक–एक पंक्ति हमें ज्ञान का संदेश करती है। ऐसी महानतम् गूढ़ वाणी को अपनी लेखनी
जयपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गोविन्दराम 'माया' समझाने का प्रयास कर रहे हैं।

उद्यम कर शुभ कर्म कारण, सीख ये ही सार है।
भाग पर कछु नाहिं राखो, वेद ग्रन्थ पुकार है।

सत्गुरु महाराजनि फ़रमाईनि था त सार जी गाल्ह ईहा आहे त असांखे शुभ कर्म करण जी कोशिश करण घुरिजे, इनखां वदी बी का सिख्या कोन आहे।

इंसान खे भाग ते न भारण घुरिजे चइनी वेदनि ऐं बियनि ग्रन्थनि में ईऐं ही चयल आहे। हिन सिख्या ज़रिए शुभ कर्म जो मतलब समुझणो पवंदो। जिन कर्मनि करण सां इंसान में राग ऐं द्वेष पैदा न थिए उहे ही शुभ कर्म आहिनि। हिते शुभ कर्म करण जो मतलबु कंहिंजो भलो करण ताईं सीमित कोन आहे। हिते शुभ कर्म जो अर्थ आहे कंहिंजो भलो त करियो पर भले करण जो रागु न पालियो भलो नामूस कमाइण या मान सन्मानु हासुलु करण वास्ते न कयो। बस पंहिंजे विवेक अनुसार पंहिंजो फ़र्जु पूरो करियो। इंसान खे शुभ कर्म ही करण घुरजनि इहो ही हिन संसार जो सार आहे।

अगिते गुरु महाराजनि फरमाईनि था त असांखे भाग ते न भारण घुरजे। भाग ते भारण सां असां संसार जे कर्मनि जो फल सुख या दुःख करे भोगियूं था। अगर रुगो भाग ते भारे करे असां कर्मनि जो फल भोगण में लगी वेंदासूं त शुभ कर्म थींदो ही कोन ऐं न ही उनजी कोशिश थींदी ईहो वेदनिं ऐं ग्रन्थनि जो निचोड़ आहे। शुभ
कहिड़ा आहिनि? ईहो त असां दिठो पर शु
कीअं कजनि ? इन लाइ सेवा, प्रेम ऐं त्य
विधान खे समझणो पवंदो। संसार में असां
सुख था चऊँ उहो असांखे बियनि जी सेव
मिलियल धन–सम्पदा, ताकत ऐं मौको आहे।
इन सुख जो उपयोग विवेक अनुसार बिय
भले वास्ते करण घुरिजे। संसार में जेको
दुःख मिलियो आहे उनसां असां में त्याग क
हिम्मत पैदा थी सघे थी मतलब त दुख स
अचाह थींदो आहे। सेवा सभिनि जे लाइ उ
आहे। सेवा करण सां ही इंसान जी चाहना
थींदी आहे ऐ हू अचाह बणिबो आहे ऐं
इंसान अचाह बणिबो तदहिं हू फकति पंहि
पर सभिनी जो हूंदो आहे यानि अचाह रूप
सां हुनजे वास्ते सभिनी जे मन में प्रेम
आहे। इन रीत शुभ कर्मनि जी शुरूआत
आहे। चवण जो मतलबु शुभ कर्म निस्वार्थ
आहें असांखे गुरु महाराज जी बी सिख्या
शुभ कर्म यानि सेवा करण जी जल्दी ही श
करण खपे जीअं त ग्रन्थनि में चये अनुसार
जो मकसद पूरो थिऐ।

निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबन्ध

प्रेम प्रकाशियों के आराध्य आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के 116 वें जन्मोत्सव पर "सद्गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन निबन्ध प्रतियोगिता" में जयपुर एवं अन्य शहरों के 350 से अधिक भक्तजनों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के पुरस्कारों को दो वर्गों में घोषित किया गया। बाल आयु वर्ग व युवा आयु वर्ग। युवा वर्ग के पुरस्कृत प्रतियोगियों के पुरस्कृत निबन्ध इस अंक से क्रमशः प्रकाशित किये जा रहे हैं। सभी प्रतियोगियों को आशीर्वाद श्री सद्गुरु महाराज जी का।

एक समय देव लोक में भगवान विष्णु, महेश व अन्य देवतागण, मृत्युलोक की चर्चा कर, आपस में मंत्रणा कर रहे थे। तभी हरी गुणगान करते हुए देवर्षि नारद वहां आये। समस्त देवों को प्रणाम कर प्रार्थना करने लगे, कि हे देव! मैं अभी मृत्यु लोक की यात्रा से आ रहा हूँ। वहां के जीव अज्ञान की राह में भटक कर पाप कर्मों को करके अनेक दुखों का सामना कर रहे हैं। अतः उन जीवों के कल्याणार्थ व भटके हुये जीवों के अंधकार मिटाकर उनके जीवन में ज्ञान की ज्योति जगाने हेतु कोई उपाय बतायें। तब श्री विष्णु भगवान ने शंकर से कहा कि आप मृत्यु लोक जाकर मनुष्यों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश कर सोते हुए जीवों को जगाने का उत्तम कार्य करें। इसी निश्चय को कर, भगवान शंकर ने समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु मृत्यु लोक में रहने का निश्चय किया। इस निश्चय के क्रियान्वयन में उन्होंने एक परिवार में साधारण बालक के रूप में जन्म लेकर कर्म, धर्म, धीरज तथा दृढ़संकल्प की लीला करते हुये एक साधारण जीव के रूप में अवतार धारण करने का निश्चय किया। तब भगवान शंकर ने एक भगवत प्रेमी परिवार का चुनाव किया। जो कि सिंधु नदी के किनारे बसे सिन्ध देश के "खण्डू" नामक नगरी में रहता था, जिसका नाम था श्री चेलाराम व उनकी धर्म पत्नी स्त्री का नाम था कृष्णा देवी।

भगवान शंकर ने अंश रूप धारण करके सम्वत् 1944 शनिवार के दिन प्रातः वेला में मां कृष्णा के गर्भ से एक दिव्य बालक के रूप में अवतार लिया। उस बालक के जन्म समय समस्त देवलोक गद्गद हो आकाश से आशीर्वाद रूपी बादल बरसाने लगे। वह बालक असीम शक्तियों व ऋद्धि–सिद्धियों से पूर्ण होते हुए भी जनकल्याण के कार्य हेतु साधारण रूप में दिखाई पड़ता था, क्योंकि उस दिव्य बालक को बड़ा होकर ज्ञान कर्म व सत्य का मार्गदर्शन कराना था। साधारण सी खुशी व प्रेम भाव से उनका नामकरण संस्कार किया गया। जिसमें स्वयं विष्णु भगवान ने ब्राह्मण रूप धर उस बालक का नाम "टेऊँराम" रखा।

प्रकृति के नियमानुसार उनको तो साधारण जीवन में रहकर जीवों के उद्धार हेतु अनेक लीलायें जो करनी थी, इसी कारण वश वे साधारण जीवन जीने हेतु बड़े होने का इंतजार करने लगे। समय की सुई आगे चलती रही, तो बालक थोड़ा बड़ा होता गया। अपने हम उम्र बालकों के साथ उस बालक का मन नहीं लगता था। वह हमेशा एकान्त में रहना पसंद करता था। वह कई–कई घन्टे एकान्त में बैठ चिंतन में लीन रहता था।

एक समय सब बालक मिलकर सिन्धु नदी के तट पर खेलने के लिए गये। वहां सभी बालक खेल रहे थे, किन्तु यह दिव्य बालक सिर्फ सिन्धु नदी को निहार रहा था। सिन्धु नदी भी उस दिव्य बालक के दर्शन कर अभिभूत हो उनके चरण स्पर्श को लालायित हो उठी। तब सिन्धु नदी की इच्छा पूर्ति हेतु वरूण देव ने एक लीला रची। वहां सारे बालक खेलकर अब नहाने की इच्छा करने लगे। तब सब बालकों ने कपड़े उतारकर उस दिव्य बालक को दिये व उस सिंधु नदी में नहाने लगे। उन बालकों में एक "खिल्लू" नामक बालक भी था, जो वरूण देव की लीलानुसार बहने लगा। सब बालक चिल्लाने लगे। तब उस दिव्य बालक ने बिना एक क्षण गंवाये, उस सिन्धु नदी की प्रबल धारा में छलांग लगाकर, खिल्लू नामक बालक को बचाने लगे। उसी क्षण भगवान विष्णु भी इसी लीला

को देखने की लालसा मन में रख वहां प्रकट हुए। तब भगवान श्री उस दिव्य बालक से वार्तालाप कर चले गये। वरूण देव भी उस दिव्य बालक को प्रणाम कर फूले नहीं समा रहे थे। सिन्धु नदी के भाग्य के तो क्या कहने, वो भी इस दिव्य बालक के चरण स्पर्श कर अपने को धन्य समझ रही थी। इस प्रकार बचपन में ही उस दिव्य बालक ने साधारण जीवों के उद्धार हेतु कई कार्य किये। उस दिव्य बालक के पिता ने बालक को पढ़ाई करने हेतु पाठशाला भिजवाने का निश्चय किया। बालक ने अपने पिता की आज्ञानुसार पाठशाला जाने का निश्चय किया। पाठशाला में दिव्य बालक को शिक्षक रूपी गुरू आसूराम जी महाराज के दर्शन होते हैं। बालक को पढ़ना तो क्या, सिर्फ लीला हेतु वे पाठशाला में जाने लगे। उनको गुरू आसुराम जी महाराज ने उस सच स्वरूप "ॐ" नाम की दीक्षा दी। बस वे इसी एक अक्षर में ही सारे ब्रह्माण्ड का स्वरूप देख उसी एक अक्षर को पढ़ ध्यान मग्न हो गये। सांसारिक पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता था। वे दिन भर एकान्त में रहकर "ॐ" अक्षर का अभ्यास करने लगे। समय आगे बढ़ता है। बालक को तो ज्ञान का प्रकाश बाहर फैलाने के लिए अनेक लीलाएं जो करनी थीं व प्रेम का प्रकाश फैलाना था। वे सांसारिक बातों से मन हटाकर परमात्म चिंत में लगे रहते थे। चिन्तन करते करते उनका मन संसार से विरक्त हो उठा। बालक को यह दुनिया सब मिथ्या लगने लगी। 12 वर्ष की छोटी अवस्था में ही उनके मन में योग की भावना उत्पन्न हुई और वे कभी जंगलों में जाकर, तो कभी कब्रिस्तान में, तो कभी शमशानों में, तो कभी घने वृक्ष के नीचे, तो कभी विशाल गुफाओं में जाकर उस "ॐ" शब्द का अभ्यास करने लगे। उन्हें हिंसक पशुओं से भी डर नहीं लगता था। वे भी इनके आगे नतमस्तक हो इनकी वंदना करते थे। एक दिन सब देवों ने संतों का रूप धारण कर इस दिव्य बालक के दर्शन करने की सोची और वे सब संतों की टोली में उनके घर पधारे, संतों को देख उस दिव्य बालक की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वे श्रद्धा, प्रेम, उल्लास के साथ उन संतों की सेवा में लगे रहे। सारी सेवा अपने हाथों से करने में ही अपना उद्धार देखकर स्वयं हाथों से सेवा कर अपने को धन्य समझ रहे थे।

सेवा का फल ही था जो आज इस बालक की कीर्ति पूरे ब्रह्माण्ड में फैल रही है। संतो की सेवा व संतों के संग ने उनके मन में वैराग उत्पन्न कर माता–पिता से प्रार्थना करने लगे कि मुझे इस सुधारने का मौका मिला है, मैं इस मिथ्या छोड़कर अपने जीवन को सत्कर्म व सेवा में चाहता हूँ। यही दृढ़ निश्चय कर वे हमेशा जंगल लगे। सत्संग–भजन गाने हेतु उनके मन में यक की इच्छा हुई। उन्होंने स्वयं मेहनत मजदूरी करके साज खरीदा। ऐसी भावना जो आगे चलकर का स्वकर्म की सच्ची शिक्षा बनी।

एक दिन उसी नगर में एक गरीब औरत बाहर एक कुत्ता मर गया। उस कुत्ते को हरि उठाने के लिए अधिक पैसे मांग रहे थे। उस औरत पैसे थे नहीं। तब बालक स्वयं अपने हाथों से कुत्ते को उठाकर दूर फैंक आये। पूरे नगर में जब उठी, तो वहां की पंचायत ने उन्हें बुलाया और यह काम हरिजन का है। तब दिव्य बालक के वच **उपकार व सेवा में कोई काम छोटा व बड़ा न है। मैंने परोपकार हेतु ही यह नीच कार्य कि आप चाहें तो मुझे, जो दण्ड देंगे, मुझे स्वी** ऐसी अनन्त लीला कर दिव्य बालक ने अपने द्वा दृढ़ इच्छा शक्ति व सेवा भावना का परिचय दि

समयानुसार बालक अपनी साधना में कार्य करते हुए युवावस्था में प्रवेश करता है। युव भी वे अपने शुभ कार्यों में, दुनिया की सेवा ए इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर उस सच्चिदानंद भ आराधना करते रहे। एक समय वरूण देव ने युग परीक्षार्थ सिन्धु नदी में तेज बहाव लाकर सिन्धु को जल में बहाने की सोची। तब सब मिलकर पुरूष के पास पहुँचे। युग पुरूष चाहते तो अ शक्ति से उस जल के प्रताप को रोक सकते सिन्धु नदी जाकर, भगवान वरूण देव से प्रा प्रसन्न किया व सिंधुवासियों के कष्ट को दूर कि प्रकार अपने को निमित्त मानकर उन्होंने हमेश जाति की सेवा व मानव जाति के उद्धार हेतु कइ रचीं।

एक समय युग पुरूष अपने नित्यकर्मों हुए जंगल में बैठे अमृत रूपी नाम का स्मरण क तब भगवान विष्णु की माया को संशय हुआ कि

रूष वास्तव में तपस्या में लीन है और इसने अपनी न्द्रियों को वश में किया हुआ है कि नहीं। यह धारणा कर या एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण कर युग पुरूष की रीक्षार्थ उनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए उपस्थित ई। लेकिन उस युग पुरूष की तेज शक्ति व तेजस्वी खमण्डल का सामना न कर पाने के कारण, उनके चरणों नतमस्तक हो वंदना करने लगी। तब उनके श्री चरणों देखा, तो वहां उस माया को असीम शक्ति का भंडार व द्धियाँ–सिद्धियाँ, शंख–चक्र–गद्य–पद्म यहाँ तक की ाल भी उनके चरणों में विचरण करते हुए दिखाई दिये। सा अलौकिक दृश्य देखकर माया उस युगपुरूष के श्री रणों में वंदना कर वहाँ से चली गई।

इस प्रकार युग पुरूष समस्त कामनाओं को जीतकर पनी इन्द्रियों को अपने वश करके, क्रोध रूपी ज्वाला को ो निर्मल जल की भांति ठण्डा कर जीवन में विचरण कर हे थे। प्रारब्धानुसार एक समय युग पुरूष ने सुना कि:–

जग रचना सब झूठ है, जान ले मेरे मीत।
कह नानक चिर ना रहे, ज्यू बालू की भीत।।

बस, यही बात उनके दृढ़संकल्पी मन को भा गई। सारे जगत को मिथ्या रूप तो पहले ही कहते थे। बस ालू की भीत को स्थित बनाने की सोच वे जंगल में बालू के टीले की तलाश में निकल पड़े। दृढ़ शक्ति से उन्होंने यह बालू का टीला भी ढूंढ़ निकाला। अपना यकातारा ले यह उस बालू के टीले पर आसन लगाकर वहीं रहने का निश्चय किया। दृढ़ निश्चय अनुसार उन्होंने वहीं बालू के टीले पर ही स्वयं अपने हाथों से एक पर्ण कुटिया का निर्माण कर लिया। वहीं बैठ अपनी साधना में लीन हो अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जगाने लगे। कभी–कभी वे यकतारा लेकर ऊँचे स्वर में गाकर भी अपने मन को समझाने का प्रयास करते।

उनकी निर्विकार भक्ति, असीम साधना शक्ति, परोपकारी भावना व यकतारे की गूंज इतनी तेज थी कि उनकी गूंज से एक समय देव लोक में इन्द्र का सिंहासन तक हिलने लगा। अपना सिंहासन हिलता देख इन्द्र घबराकर अपने गुरू बृहस्पति के पास गये और चिंतित मन से गुरू को उस युगपुरूष की बात उनको कह सुनाई। बृहस्पति देव ने इन्द्र की व्यथा को भांप उनसे कहा इन्द्र! यह युगपुरूष कोई साधारण व्यक्ति नहीं अपितु अवतारी पुरूष है। इसे न तो तुम्हारे इन्द्रासन की चाहना है, न ही धन, वैभव व कीर्ति की। यह तो अलौकिक शक्ति द्वारा उस अमर तत्व की प्राप्ति हेतु यह तपस्या कर रहे हैं। इस युगपुरूष के चरणों में तो असीम शक्ति का भण्डार है। ऋद्धियाँ–सिद्धियाँ इनकी अनुचर समान हैं। यह युगपुरूष तो कल्याणार्थ ही भटके हुए प्राणियों के पथ प्रदर्शन हेतु ही अपने शरीर को कष्ट दे साधना में लीन है। इनकी भक्ति निर्विकार है। इस प्रकार युग पुरूष की वंदना करते हुये स्वयं बृहस्पति देव ने यह वाक्य इन्द्र के समक्ष दोहराया:–

जग कारण तारण भव, मंजन धरणी भार।
इही श्री कैलाशपति तब, धार टेऊँराम अवतार।।

इस प्रकार युग पुरूष की तपस्या व भक्ति का प्रकाश चारों और फैलकर इस संसार को दैदीप्यमान करने लगा। वहाँ लोगों का अपार जन समुदाय आने लगा। उनके अनेक शिष्य अनुयायी बन जीवन सफल करने लगे। उनकी बतायी गई शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करने लगे। युगपुरूष ने भी जन कल्याण की भावना से प्रेरित हो, उस बालू के टीले पर एक सुन्दर आश्रम के निर्माण का संकल्प किया। ताकि आने वाले श्रद्धालु लोगों को बैठने व सत्संग श्रवण में कोई कठिनाई न आये। इस संकल्प को पूरा करने हेतु स्वयं अपने हाथों से दिन रात अखण्ड मेहनत करके आश्रम का निर्माण किया। कहते हैं परोपकारी कार्य में विघ्न जरूर आता है। इसी कारणवश उनकी कीर्ति व उनकी सेवा भावना देख कुछ पाखण्डी लोग व शरारती लोगों वे वहाँ उपद्रव फैलाया। उस युगपुरूष को अपशब्द कहे। अनेक प्रकार के कष्ट पहुँचाने लगे। जब उनकी इन बातों से युगपुरूष विचलित न हुए तो बौखलाकर उन लोगों ने उस आश्रम में आग लगा दी। कुएं में भी गंदगी डाल कुएं को मैला करने का प्रयास करने लगे। इन सारी विकट परिस्थितियों को देखकर भी उस युगपुरूष की धैर्य सीमा न टूटी। उनके मुख से उन पाखण्डी पुरूषों हेतु कुछ नहीं कहा गया वे इसे भी परीक्षा की घड़ी समझ हरी इच्छा कहते हुए अपने दृढ़निश्चय पर आधारित योजना को मूर्तिरूप देने में लगे रहे। पाखण्डी लोगों को यह बात रास नहीं आयी और उन्होंने नयी योजना बनाकर सरकार में प्रार्थना की कि इस पुरूष को यहाँ से बेदखल किया जावे। यह देख स्वयं विष्णु भगवान मां लक्ष्मी सहित (लक्ष्मीनारायण) एक विदेशी का रूप धर युगपुरूष के पास

आये और कहने लगे कि कहो तो हम तुम्हारी सहायता करें। आप एक प्रार्थना पत्र लिखकर दीजिए। हम सरकार से तुम्हें जमीन दिलवा देंगे। तब उन युगपुरूष ने कहा जिसने आश्रम जलाया है बनायेगा भी वो (वे पहचान गये थे कि भगवान रूप धारण करके आये हैं)। यह बात सुन स्वयं भगवान व मां लक्ष्मी उनकी परमार्थ व परोपकारी भावना से प्रभावित हो उनकी वंदना करते हुए वहाँ से चले गये।

धीरे–धीरे वहाँ एक सुन्दर आश्रम का निर्माण हुआ। उस युगपुरूष ने एक सर्वशक्ति सम्पन्न मंत्र दिया "**सत्नाम साक्षी**"। नित्य प्रति सत्संग वर्षा होने लगी। जहां बैठ असंख्य लोग सत्संग लाभ ले अपना जीवन सफल करने लगे। उस आश्रम की सेवा वे स्वयं देखते थे। सारे आश्रम में यकतारा ले विचरण किया करते थे। आने वाले श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान रखते व स्वयं उनको पानी व ढोढा चटनी खिलाकर तृप्त किया करते थे।

एक बार आश्रम की देखभाल करते हुए वे एक कोने में लगे हुए कण्डी के वृक्ष के पास गुजर रहे थे तो देखा कि यहाँ से सेवाधारियों को आने–जाने पर कांटे चुभते हैं। बहुत परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। पास में खड़े शिष्यों ने कहा स्वामी जी आप आज्ञा दें तो इस कंडी के पेड़ को काट दें। स्वामी जी कहने लगे कि इस आश्रम में सबसे प्रिय वस्तु कोई है तो वह कण्डी का वृक्ष है। यह ध्यान करने में बहुत सहायता करता है। तब स्वामी जी ने अपने चिप्पी से जल का छींटा मारकर उस कंडी वृक्ष के कांटे हमेशा के लिए निकाल दिये।

जिज्ञासुओं को अमरत्व प्राप्त होने के कारण स्वामी जी ने इस आश्रम का नाम श्री अमरापुर स्थान रखा। स्वामी जी का अवतार शनिवार के दिन हुआ था। तभी शनिवार को भी वरदान प्राप्त हुआ। जो भी जिज्ञासु शनिवार के दिन श्री अमरापुर स्थान का दर्शन करेगा। वह अमरत्व प्राप्त करके शनि के प्रकोप से बचा रहेगा। इस प्रकार उस युग पुरूष ने परमार्थ के कार्य करते हुए कालान्तर में अपने ज्ञान के व अपनी अनुभव शक्ति और योग शक्ति को जन कल्याणार्थ एक ग्रंथ में संग्रहित किया उसका नाम रखा "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ**" सत्य सनातन धर्म के अंतर्गत एक सम्प्रदाय की नींव डाली। जिसका उन्होंने नाम रखा "**श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय**" उन्होंने एक ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया जो कि "**...मेला**" नाम से विख्यात हुआ। उनके द्वारा स्थापि... ज्ञान भण्डारे का भी श्रद्धालु लोग रसास्वादन ... तक अपने को धन्य समझते हैं।

इस प्रकार समय की धुरी आगे चलत... **प्रकाश सम्प्रदाय** जो अब फूल की मानिन्द सु... रहा था जिसमें उस युग पुरूष के असंख्य शिष... थे, जो अब विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुके थे ... युग पुरूष ने सभी शिष्यों को मिलाकर एक "**प्रे... मण्डल**" रूपी वट वृक्ष की नींव डाली। जिस व... उन्होंने जड़ें पाताल से गहरी व ऊँचाई ब्रह्माण्ड से ... रखी। कालान्तर में उस वट वृक्ष की जड़ें शिखर ... व उस वट वृक्ष ने एक विशाल रूप धारण ... जिसमें असंख्य फल पकने की तैयारी में थे। ऐसे ... जैसे स्वामी गुरूमुखदास जी, स्वामी ग्वालानंद ... सर्वानंद जी, स्वामी शांतिप्रकाश जी, स्वामी बसं... स्वामी माधवदास जी, स्वामी चंदनराम जी, स्वामी ... जी व स्वामी जयमुक्त सरीखे पक चुके, फल ... को प्राप्त हुये।

इस **प्रेम प्रकाश मण्डल** के वट वृक्ष ... सूखने वाली नहीं सदैव हरी–भरी रहेगी। जब त... में तेज, चंदा में चमक, गंगा–यमुना की धारा बह... तब तक "**प्रेम प्रकाश पंथ**" का नाम सदैव उ... कायम रहेगा।

इस महान युग पुरूष ने पुरूषोत्तम मा... 1999 शनिवार के दिन पंच भौतिक शरीर को त्य... उस शिव स्वरूप में समाहित हो अनंत में जा वि... इस अवसर पर स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, समस्त ... पाताल लोक, गंधर्वलोक व समस्त भूमण्डल व स... गंधर्व किन्नर पंथ व समस्त मानव जाति के मुंह मे... ही वाक्य थाः–

"टे" त्रिगुण स्वरूपाय, "ॐ" निर्गुण ...
टेऊँ ब्रह्मा मिधानाय, नमस्तयैः नमो ...

तीन गुणों के स्वरूप, तीनों गुणों से प... निराकर ऐसे ब्रह्म स्वरूप सद्गुरू टेऊँराम जी मह... हमारा शत–शत प्रणाम है।

भग...

30/51/6 स्वर्ण पथ, मानसरोवर

था शिखरध्वज चूड़ाला धारावाहिक–23

बूझें आत्म तत्व की पहेली

(रचयिता–आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज)

राजा शिखरध्वज के मन में अपने ल्याण की चाहना हुई और वो संतों के पास पहुँच या। महापुरूषों का वचन है:–

'संत मिले कुछ कहिए सुनिये'

संत मिले तो उनसे कुछ न कुछ अपने कल्याण ो बात पूछनी चाहिए। संतों के मुख से निकले हुए चन जीवन में एकाएक ऐसा परिवर्तन ला देते हैं कि नुष्य अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त कर ता है।

शिष्य कितना भी ज्ञानवान हो जाए फिर भी से गुरू से ज्ञान की वार्ता करते रहना चाहिए योंकि

गुरू निश्चय युत वचन कहे जब।
देह शिष्य को परम शांति तब।।

शास्त्रों में भी ये बात आती है कि शिष्य भले ो कितना ज्ञानवान हो जाय पर,

ज्ञानवंत होवे शिष्य यद्यपि।
पूछे गुरू से निज हित तद्यपि।।

फिर भी अपने कल्याण के लिए ज्ञान के लिए निरन्तर गुरू से पूछना चाहिए क्योंकि जब कोई पूर्ण हापुरूष अपनी अनुभवी वाणी द्वारा निश्चय युक्त चन कहेगा तो उसकी अमोघ वाणी के प्रभाव से शिष्य भी उन वचनों को धारण कर उसी निश्चय को ाप्त हो परम शांति को प्राप्त कर लेगा।

प्राचीन काल में राजा–महाराजा गुरू के पास ास्त्र और शास्त्र दोनों का अध्ययन करते थे, राजा शिखरध्वज भी पूर्ण विद्वान तथा शास्त्रों का ज्ञाता था, रन्तु संतों की शरण में जाकर यही प्रश्न करता है के– हे गुरूदेव!

करूणा कर बताइए, शरण पड़ा हूँ तोहे।
आया हूँ किस निमित्त जग, क्या करना है मोहे।।

मुझे क्या करना चाहिए? मैं हूँ कौन, कहाँ से ाया हूँ? मुझे किसने बनाया है? कौन चौरासी को ोगता है? काल किसको कहते हैं? जीव, ईश, मन, ह्म क्या है? जग का क्या आकार है?

मैं मूरख कुछ जानत नाहीं,
ना कुछ मोहे विचारा है।

मैं अज्ञानी हूँ। मैं जानता नहीं हूँ? अपनी सारी शंकाएँ, अपना सारा अज्ञान खोलकर गुरू को सुना रहा है।

इतना कथा का प्रसंग पहले होके आया है। आज के प्रसंग में गुरू महाराज जी कहते हैं– हे जिज्ञासुओं! मुमुक्षुओं! मुनि वशिष्ठ कहते हैं हे राम जी याज्ञवलक्य। कहते हैं– हे भारद्वाज!

राजा के अपने कल्याण हित पूछे गये प्रश्नों को सुनकर और उसकी तीव्र जिज्ञासा देखकर उसके संशय को दूर करने के लिए उत्तर देते हैं–

इतना सुन गुरूदेव ने उत्तर दिया विचार।
चतुर वेद के तत्व को कहन लगे निर्धार।।
अक्रिय आत्म देव जो सर्वरूप है आप।
ऐसा निश्चय धारके जपले सोऽम जाप।।

जैसा–जैसा शिष्य होता है, वैसी–वैसी गुरू उसे बताते हैं।

पात्र परस कर पारस करले।

एक गुरू के पास तीन शिष्य पहुँचे। तीनों ही गुरूदेव से कहने लगे– हे गुरूवर! हमें कोई शिक्षा, सुनाकर, दीक्षा दें उपदेशित करें।

गुरूदेव ने सोचा कि परीक्षा लेकर देखता हूँ कौन कितना पात्र है? अतएव गुरूदेव ने तीनों शिष्यों से एक ही प्रश्न किया– भाई! बताओ! कान में, आंख में और नाक में कितना फर्क है? कितनी दूरी है?

पहले शिष्य ने कहा–महाराज केवल पाँच उंगल का फर्क है।

दूसरा कहता है– नहीं महाराज! आँख देखा गया अधिक प्रामाणिक है। कान से सुना गया इतना प्रामाणिक नहीं रहता।

जगत में बहुधा देखा गया है कि जो चीज देख ली जाती है, सुनी हुई बात की अपेक्षा वह ज्यादा विश्वसनीय, ज्यादा प्रामाणिक होती है।

तीसरे शिष्य ने कहा– महाराज! आँख से

कान की विशेषता ज्यादा है जो चीज आँख देख नहीं सकती वो कान सुन लेते हैं। श्रवण के द्वारा ही उस तत्व की प्राप्ति होती है।

तीनों के उत्तर सुनकर गुरूदेव ने तीनों को अलग–अलग उपदेश किया। पहले शिष्य को कहा-- जाओ! अभी सेवा करो, अभी तुम्हारे अंदर वो बात नहीं जो तुम्हें उपदेश किया जा सके।

दूसरे शिष्य को गुरू ने उपासना की विधि सिखाई और तीसरे को ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया।

अपनी–अपनी पात्रता के अनुसार तीनों को ज्ञान अर्थात् उपदेश मिला।

इसी प्रकार शिखरध्वज भी जो प्रश्न पूछता है, उनको सुनकर गुरूदेव ने जान लिया कि राजा उत्तम जिज्ञासु है। इसके जो प्रश्न हैं, अपने कल्याण के निमित्त पूछे गये प्रश्न हैं, अतः इसको ब्रह्मज्ञान का उपदेश करना चाहिए। अतएव गुरूदेव चारों वेदों के सार तत्व राजा को बताने लगे।

इन्द्रियातीत आत्मा

अक्रिय आत्म देव जो, सर्वरूप है आप।
ऐसा निश्चय धरके, जपले सोऽम् जाप।।

आत्मा है कैसा? अक्रिय है। क्रिया से रहित है। क्रिया है या नहीं उसके अंदर। न आना है, न जाना। न उठना है, न बैठना। न सोना है, न जागना। जो भी क्रिया इस संसार में होती है, वो आत्मा में नहीं है और वो ही तेरा रूप है। पर ये बातनिश्चय किए बिना समझ में आने वाली नहीं है।

ऐसा निश्चय धारके जपले सोऽम् जाप।।

निश्चय करके सोऽम् का जाप कर ले। सोऽम का मतलब क्या है? सः और अहम् दोनों को मिलाकर सोऽम बना है। सः का अर्थ है वह और अहम् माने मैं। अर्थात् वह आत्मस्वरूप मैं ही हूँ।

कई व्यक्तियों को यह कहते सुना जाता है कि मैंने अपने आपको समझा है वह मैं नहीं हूँ, मैं तो आत्मा हूँ, मैं परमात्मा हूँ, परन्तु इतना मात्र से कुछ होने वाला नहीं। भले हम गुरू मंत्र ही क्यों न ले लें, तो भी मुक्ति मिलने वाली नहीं क्योंकि मात्र कहने से कभी मुक्ति नहीं मिलती।

अगर मंत्र मिलने मात्र से मुक्ति होती तो राजा की मुक्ति हो गई होती पर याद करना, राजा की मुक्ति नहीं हुई वो तो बाद में जब रानी ने उसको ज्ञान दिया और राजा ने उस ज्ञान को
धारण किया, तब कहीं जाकर राजा की मुि

अर्थात् उस तत्व की अनुभूति केवल
मात्र से नहीं, बल्कि उस तत्व को जानना है, प
है, अनुभव करना है उस तत्व को।

गुरू महाराज जी का वचन भी है वि
अनुभव का विषय है, इंद्रियों का नहीं। अ
अनुभव तो किया जा सकता है, पर इंद्रियों
उसकी थाह लेना असंभव है।

संत महात्मा बताते हैं कि जब पेट में
है तो क्या आप उसे देख सकते हैं? नह
केवल उसे अनुभव कर सकते हैं। अगर ची
करके देख लिया जाए तो दर्द कहीं न
आता।

अब कोई कहे आपको कि दर्द दिखा
कैसा है, उसका रंग क्या है, रूप कैसा है,
क्या कहेंगे। भाई ये तो मैं बता सकता हूँ
ऐसा है, जो सहन करने से परे हैं, पर उस
रूप मैं नहीं बता सकता।

इसी प्रकार आत्म तत्व का ज्ञान इ
इंद्रियों के द्वारा नहीं हो सकता। न तो इं
सूंघ सकती हैं, न तो इसे इंद्रियों द्वारा सुन
न ही देख सकते हैं, न ही सुन सकते हैं, न
सकते हैं, न ही उसका रस ले सकते हैं।
को जानने के लिए ये इंद्रियां किसी भी प्र
सबल नहीं हैं।

उस तत्व को जानने के लिए आंतरिक
चाहिए। आंतरिक इंद्रियां कौन सी हैं? जब
इंद्रियां अंतरमुखी हो जाती हैं, तब इन इं
विषय दूसरा हो जाता है। ये इंद्रियां स्थूल
सूक्ष्म हो जाती हैं और उसी सूक्ष्म इंद्रियों द्वार
समझ आती है।

अभी हमारी स्थिति तो ऐसी है कि ह
स्थूल इंद्रियों, स्थूल शरीर को जानते हैं
स्थूल साधनों के द्वारा हम सूक्ष्म तत्व का अनु
कर सकते। उस अंदर की बात को नह
सकते। इस तत्व को वो ही समझ सकता है
आंतरिक पथ पर कुछ साधना की है।

तो जब अनुभव हो तभी कहना सही है
ब्रह्म हूँ'' अन्यथा नहीं।

अनुभव के सागर में निश्चय के मोती

बात जब अनुभव में आती है समझ में आती है स्वतः ही उसका निश्चय हो जाता है। जैसे कोई हो, पुरूष हो, तो क्या उसको याद करना पड़ता कि मैं स्त्री हूँ, मैं पुरूष हूँ। कभी पुरूष को स्वप्न तो नहीं आता कि मैं स्त्री हूँ।

हर क्षण उसके अंतर में निश्चय रहता है कि पुरूष हूँ, साथ ही साथ उसे अपने कुल, वर्ण, नाम र भी याद रखने नहीं पड़ते। इन सबकी उन्हें , सर्वदा स्मृति बनी रहती है। नींद में से उठाकर अगर पूछो कि तुम्हारा नाम क्या है तो उठकर ना नाम बता देगा। तो कितना निश्चय है अपने का। इसी तरह जब आत्म तत्व का निश्चय हो एगा तो ये बात अपने आप ही नजर आ जाएगी मैं नाम रूप से न्यारा हूँ जो जगत में भासता है सब मिथ्या है। मैं इन सब से अलग हूँ पर वो चय कब होगा।

अनुभव के बगैर नहीं होगा और अनुभव अर्थात् कैसे आएगी। संतों महापुरूषों का ज्ञान सुनते–सुनते बात समझ में आ जाएगी। तत्व तो गूढ़ है, पर ना भी गूढ़ नहीं है कि समझ में ही न आए।

नचिकेता को भी जब ये बात समझ में आ गई आत्म तत्व ही सार है तो वह यमराज के द्वारा ये गये प्रलोभनों– राज–पाट, इन्द्र का राज, स्वर्ग अप्सराएँ, चक्रवती सम्राट का पद लाखों बरसों ले पुत्र–पौत्र, सभी का परित्याग करके केवल त्मज्ञान देने की विनती करता है। नचिकेता कहता – हे यम भगवान! आप कहते हैं आत्मा तत्व के रे में देवताओं को भी संशय हो जाता है, जब वताओं को ही संशय है तो फिर मुझे इस तत्व का श्चय और कौन कराएगा।

हमारे सत्गुरू महाराज कहते थे कि आपको गर ये सारे पदार्थ मिलें और आत्मज्ञान मिले तो प क्या लेगें? आपका उत्तर यही होगा कि ये सब दार्थ दे दो हमारे को। क्यों? क्योंकि हमें निश्चय है इन पदार्थों में सुख है।

परन्तु जो नचिकेता की तरह इन सब सुखों से पर उठकर आत्मज्ञान को पाने के लिए तैयार हो ता है, उसे आत्मज्ञान मिलता है।

जो सर्वस्व छोड़ने को तैयार है, जगत की कोई वस्तु उसे संतुष्ट न कर सके, जो उस तत्व की प्राप्ति के लिए पूर्ण निश्चय कर लेता है, उसे उसकी प्राप्ति से कोई नहीं रोक सकता।

राजा शिखरध्वज को भी ये निश्चय हो गया कि मुझे उस आत्म तत्व को ही प्राप्त करना है। सारा राज–पाट छोड़ दिया और आकर गुरू की शरण में बैठा है, गुरू उसे विस्तारपूर्वक आत्म तत्व के बारे में बता रहे हैं।

आत्मतत्व : क्रिया रहित

"अक्रिय आत्म देव जो"

अक्रिय शब्द को समझेंगे। अक्रिय माने जो क्रिया न करे।

अब अगर आत्मा तत्व अक्रिय है तो ये जो सारी क्रिया नजर आती है वो फिर किसमें होती है, ये जो सारा फुरना ये कैसे हुआ फिर?

कहते हैं, शास्त्रों में आता है कि ब्रह्म के अंदर फुरना उत्पन्न हुआ और ये सारा जगत बन गया। जब आत्म तत्व अक्रिय है, फिर ये फुरना उठा कैसे? विचार करें। ये आत्म तत्व कोई मोटी बुद्धि का खेल नहीं, उसके लिए सूक्ष्मता से विचार करना पड़ता है, तब कहीं जाकर उस तत्व के करीब पहुँचकर एकरस हो सकेंगे अन्यथा नहीं।

कई बातें बड़ी अजीब हैं, जिनका उत्तर ही नहीं मिलता। जब ब्रह्म अक्रिय है तो फुरना कैसे उठा? माया कैसे पैदा हुई? अस्तित्व भी उसका ब्रह्म से ही है और फिर ब्रह्म को ही ढक लेती है।

फुरने का ये बना पसारा, ना कछु आया जाया।
ना कछु आया जाया, हरि ने अजब तमाशा लाया।।

फुरने का क्या कारण है? सब जीवों के जो संस्कार थे उनके कारण फुरना उत्पन्न हुआ।

जैसे करंट है, करंट में कोई फुरना नहीं है अपना। परन्तु जब कोई उसके संपर्क में पंखा ले आए, ट्यूबलाइट ले आए तो ट्यूब लाईट जलती है, पंखा चलता है, गरम होता है, ठंडा होता है, सब कुछ होता है।

अब बताओ बिजली गर्म है या ठंडी? फ्रिज, कूलर, ए.सी. उसी बिजली से ठंडक उत्पन्न करते हैं और हीटर, गीजर, ओवन आदि उसी से गर्मी देते हैं।

तो करंट में क्रिया नहीं है वो तो एक रस है, स्थिर है परन्तु जो वस्तुएँ उसके संपर्क में आती हैं,

उसके अं.. क्रिया होती है।

इसी प्रकार आत्म तत्व में कोई क्रिया नहीं है, परन्तु शरीरों के अंदर क्रिया है और किसकी सत्ता पे है, है भी आत्म सत्ता से।

जाकी सत्ता से जड़ माया।
भासे सत्य इह मोग सुभावा।

ये जड़ माया जो है, जड़ चीज है उसके अंदर आत्म तत्व की शक्ति मिलती है। उसी से उसमें सारी क्रिया खाना–पीना, उठना–बैठना, जागना–सोना नजर आती है और आत्म तत्व की सत्ता हटी तो फिर न तो चल पाता है, न देख पाता है, न सुन पाता है।

पर वो आत्म तत्व तो अक्रिय है तो क्या शरीर में से शक्ति निकल जाती है। विचार करें। जब कोई मर जाता है तो मरने पर होता क्या है आखिर? आत्मा निकल जाती है क्या उसकी? और आत्मा अगर नहीं निकलती तो शरीर क्यों नहीं चलता फिर। आत्म बल से ही शरीर चलता है ये तो मानते हैं न हम सब।

तो मरते ही आत्म तत्व कहाँ चला जाता है। अगर कहें, शरीर से बाहर निकल जाता है तो इससे तो यह साबित होता है आत्मा एक जगह है एक जगह नहीं है। जबकि कहते हैं कि आत्मा सर्वव्यापक है, कण–कण में उसकी सत्ता है तो अगर शरीर से निकल गई तो सर्वव्यापक नहीं कहना चाहिए और अगर सर्वव्यापक है तो शरीर में भी है और शरीर में है तो शरीर चलता क्यों नहीं और नहीं चलता यानि आत्मा निकल गई अर्थात् आत्मा में क्रिया हो गई, फिर आना–जाना भी हो गया।

हम कहते हैं आत्मा निकल गई और उसका दूसरा जन्म हो गया परन्तु यथास्थिति क्या है, उसे एक दृष्टांत से समझने का प्रयास करेंगे।

समझें यहाँ पर बल्ब लगा हुआ है या ट्यूबलाइट लगी हुई है। करंट चल रहा है और बल्ब फ्यूज हो जाए तो चलेगा या नहीं? करंट है या नहीं वहाँ पर तो बल्ब क्यों नहीं जल जाता।

बल्ब की तार टूट गई यानि बिजली की जो करंट प्राप्त करने की शक्ति थी वो समाप्त हो गई। इसी प्रकार आत्म सत्ता तो वैसी की वैसी है परन्तु उस शरीर की उस सत्ता को धारण करने की शक्ति समाप्त हो गई। शरीर ही जीर्ण शीर्ण होता है। आत्मा कहीं आती जाती नहीं।

फिर जन्म होता किसका है? विच... आत्मा आती जाती नहीं तो शरीर कैसे ब... जहाँ पर उस सत्ता को धारण करने ... विद्यमान है, वो आत्म सत्ता उसको प्रका... लगती है।

आत्मा सर्वव्यापक है, अक्रिय है, ... करती परन्तु जहाँ उस तत्व को माध्यम ... वहाँ वह भासने लगता है। जहाँ माध्यम न... वहाँ भासती नहीं। यद्यपि दोनों स्थानों मे... समान रूप से है। गुरूदेव राजा को आत्मा... में समझा रहे हैं। राजा भी बाह्य वस्तुओं क... त्याग करके अंतर की यात्रा की ओर निक... अब आगे जैसे गुरू महाराज बतायेंगे हम भ... का प्रयास करेंगे।

गीत

आज से मेरे सपने तेरे 2
देखूँ साईं तुझे शाम सवेरे.......2
आज से मेरे सपने तेरे।

(1) चंचल मनवा यूँ ना बहले।
जब तक तुमसे कुछ ना कहले।
रह सकता हूँ भूखा प्यासा।
तुम हो साथ जो मेरे...........2
आज से मेरे सपने तेरे।

(2) लाखों हैं इस जग के दुःखड़े।
इक इन्सान के दो–दो मुखड़े।
क्या समझूँ किस को पहचानूँ।।
चारों ओर अन्धेरे...........2
आज से मेरे सपने तेरे।

(3) ना समझी नैया को डुबोए।
हँसने वाला क्यों ना रोए।
सुख में याद करे जो तुमको।।
दुःख काहे को घेरे...........2
आज से मेरे सपने तेरे।

(4) अन्धे देखे नाग तमाशा।
और समझायें अपनी भाषा।।
कैसी ये जहरीली दुनिया......2।
डसते जहाँ सपेरे.........2।।
आज से मेरे सपने तेरे
देखूँ साईं तुझे शाम सेवेरे।।

निंदक बाधक नहीं सहायक

क्षमा बलमशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा।
क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न सिद्धयति।।

महापुरूषों के पास भिन्न–भिन्न प्रकृति के भक्त होते हैं। बहुत से तो ऐसे होते हैं, जो उनके गुण–अवगुण को समझते ही नहीं, उनके लिये वो जो भी कुछ करते हैं सब अच्छा ही करते हैं। महापुरूषों के कार्यों में उन्हें अनौचित्य दीखता ही नहीं।बहुत से ऐसे होते हैं, जो गुण दोषों का विवेचन तो कर लेते हैं, किन्तु महापुरूषों के दोषों के ऊपर ध्यान नहीं देते, वे अवगुणों की उपेक्षा करके गुणों को ही ग्रहण करते हैं। कुछ ऐसे होते हैं, ह्रदय से उनके गुणों के प्रति तो श्रद्धा के भाव रखते हैं, किन्तु जहां उन्हें कोई भी संत को अपनी मत की बनाई छवि के विरूद्ध कार्य करते देखते हैं वहां उनकी आलोचना भी करते हैं और उन्हें उस दोष से पृथक रखने के लिये प्रयत्नशील भी होते हैं।

कुछ ऐसे भी भक्त यां कुभक्त होते हैं जो महापुरूषों के प्रभाव को देखकर मन ही मन डाह करते हैं और उनके कामों में सदा छिद्रान्वेषण ही करते रहते हैं। उपर्युक्त तीन प्रकार के भक्त तो महापुरूषों से यथाशक्ति लाभ उठाते हैं, किन्तु ये चौथे निंदक महाशय अपना नाश करके महापुरूष का कल्याण करते हैं, अपनी नीचता के द्वारा महापुरूषों की सद्‌वृत्तियों को उभारकर उन्हें लोगों के सम्मुख रखते हैं। उनके बराबर परोपकारी संसार में कौन हो सकता है जो अपना सर्वस्व नाश करके लोककल्याण के निमित्त महापुरूषों के द्वारा क्षमा और सहनशीलता का आदर्श उपस्थित कराते हैं।

क्षमा शस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्निंगः स्वयमेवो पशाम्यति।।

अर्थात् जिसके हाथ में क्षमारूपी शस्त्र है, उसका दुर्जन लोग क्या बिगाड़ सकते हैं? जहाँ तिनके ही न हों, वहाँ यदि अग्नि गिर भी पड़े तो थोड़ी देर में आप ही शान्त हो जायेगी।

महात्मा दादूदयाल जी ने निन्दा करने वाले को अपना पीर–गुरू बताकर उसकी खूब स्तुति की है। जिन पाठशालाओं में परीक्षक होते हैं और वे सदा परीक्षा ही लेते रहते हैं, उसी प्रकार इन निंदकों को भी समझना चाहिए। परीक्षक उन्हीं छात्रों की परीक्षा करते हैं जो विद्वान बनने की इच्छा से पाठशाला में पढ़ने के निमित्त प्रवेश करते हैं। जो बालक पढ़ता ही नहीं, जो जानवरों की तरह पैदा होते ही खाने–पीने की चिन्ता में लग जाता है, उसका परीक्षक परीक्षा ही क्या करेगा? वह तो निरक्षरता की परीक्षा में पहले ही उत्तीर्ण हो चुका है।

इसी प्रकार निंदक लोग उन्हीं की निंदा करते हैं जो इहलौकिक और पारलौकिक उन्नति करना चाहते हैं जो श्रेष्ठ बनने की इच्छा से उन्नति की पाठशाला में प्रवेश करते हैं, जिसके जीवन में कोई विशेषता ही नहीं, जो आहार, निद्रा, भय और मैथुनादि धर्मों में अन्य प्राणियों के समान व्यवहार करता है उसकी निन्दा–स्तुति दोनों समान हैं।

इहलौकिक उन्नति में निंदा चाहे कुछ विघ्न कर सके, किन्तु पारलौकिक उन्नति में तो निंदा सहायता ही करती है। निंदा के दो भेद हैं– एक तो अपवाद, दूसरा प्रवाद। बुरे काम करने पर जो निंदा होती है उसे अपवाद कहते हैं। उससे बचने की सभी को जी–जान से कोशिश करनी चाहिए, किन्तु निंदित कर्म किया तो है नहीं और वैसे ही लोग डाह से, द्वेष से या भ्रम से निंदा करने लगे हैं इसे प्रवाद कहते हैं।

उन्नति के पथ की ओर अग्रसर होने वाले व्यक्ति को प्रवाद की परवाह न करनी चाहिए। प्रवाद ही उन्नति के कष्टकाकीर्ण शिखर पर चढ़ाने के लिए सहारे की लाठी का काम देता है। जो लोकरञ्जन के लिए प्रवाद की भी परवाह करके उसकी अयथार्थता लोगों पर प्रकट करते हैं वे तो ईश्वर हैं। ईश्वर के तो वचनों को ही सत्य मानना चाहिए, उनके आचरणों की सर्वत्र नकल न करनी चाहिए।

धोबी के प्रवाद पर निष्कलंक और पति परायणा सती साध्वी जगन्माता सीताजी को श्री रामचन्द्र जी ने त्याग दिया। लोगों के दोष लगाने पर भगवान श्री कृष्ण स्यमन्तकमणि को ढूंढ़ते–ढूंढ़ते परेशान हो गये। ये कार्य उन्हीं अवतारी पुरूषों को शोभा देते हैं। हम साधारण कोटि के जीव यदि इस प्रकार के प्रवादों की परवाह करें तब तो हम लोगों को पैर रखने की जगह भी नहीं मिलेगी क्योंकि जगत् प्रवादप्रिय है, इसे दूसरों की झूठी निन्दा करने में मजा मिलता है। –आस्था (नर्मदा) बंटी केसवानी, जयपुर

आलिंगन

आलिंगन शब्द को सिंधी भाषा में 'भाकुर' कहते हैं।

हर मनुष्य ने अपने जीवन में कई बार आलिंगन (भाकुर) का अनुभव किया होगा और उससे प्राप्त आनंद का अनुभव भी किया होगा, यह निश्चय तौर पर मैं कहता हूँ! कोई भी पुरूष अथवा बालक या नारी सभी ने इस अहसास का अनुभव किया है।

छोटे बच्चे को जब गोद में लेकर आलिंगन किया जाता है तो अत्यंत आनंद आता है क्यों? कभी सोचा है पिता जब अपने बालकों का आलिंगन करता है तो बच्चे प्रफुल्लित हो जाते हैं। क्यों ? कभी बैठकर किसी ने इसका कारण नहीं ढूंढा होगा।

किन्तु जब एक महात्मा कभी अपने जिज्ञासु को भाकुर पाता है (आलिंगन करता है), उस समय का आनंद अकथनीय होता है। इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जाता। कभी किसी ने आज तक इस् का कारण ढूंढ़ने का कष्ट नहीं किया है।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है एक बार परम पूज्य सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज के पास जयपुर के प्रसिद्ध भगत विट्ठलदास जी मिलने आये। वे ज्यों ही स्वामी सर्वानंद जी महाराज को नमस्कार करने के लिए उनके श्री चरणों में झुके त्यों ही गुरू महाराज जी ने उनको भुजाओं में भर कर अपने हृदय से लगा लिया और उस समय भगत विट्ठलदास के आँखों में प्रेमाश्रु की धारा निकल पड़ी। बड़ा अद्भुत मिलन था। मुझे उस दृश्य को देखने पर जो आनंद प्राप्त हुआ वह वाणी से मैं व्यक्त नहीं कर सकता।

मेरे मन में यह इच्छा की कि मुझे भी गुरू महाराज यदि इस प्रकार कभी आलिंगन करें तो कितना सौभाग्य होगा।

गुरू महाराज सर्वकामना पूर्ण करने वाले हैं। उनके स्वरूप में उनकी गद्दी पर बिराजमान सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज ने मेरी यह इच्छा पूर्ण की और मुझे एक बार जब वे गांधीधाम से यात्रा करके जयपुर आये तो मुझे कहा होतचंद तुम्हारी मासी गांधीधाम में मिली बड़ा प्रेम है उसका गुरू महाराज में और स्वामी जी ने मुझे अपने भुजाओं में लेकर आलिंगन किया जिसको मैं अपने जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य का समय मानता हूँ, मैं आनंद के सागर में डूब गया।

पूज्य सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज सारे प्रेमियों को, जो उनके पास श्रद्धा से आये आलिंगन कर प्रेम में विभोर किया था। चाहे स्त्री हो या पुरूष, बच्चे हों या बूढ़े स्वामी जी ने सबको ब्रह्मस्वरूप मानकर प्रेम का दान दिया। प्रश्न यह था कि जो आलिंगन का सुख कहाँ से और क्यों आता है?

वेदान्त के सिद्धांत की दृष्टि से इसका कार[illegible] है कि जब मन की वृत्ति एकाग्र होती है तब सु[illegible] अनुभव होता है। आलिंगन के समय दोनों पक्षों में अ[illegible] का प्रवाह उत्पन्न होकर एक दूसरे में स्थिर हो जा[illegible] और मन की वृत्ति रूक जाती है। अति प्रेम के प्रव[illegible] वृत्तियाँ लीन हो जाती हैं और उस समय महाआनं[illegible] अनुभूति होती है।

इस प्रकार जो अपने मित्र या परिवार के स[illegible] के आलिंगन से जो सुख उत्पन्न होता है उससे हजार[illegible] सुख सद्गुरू के आलिंगन से होता है जिसको श[illegible] व्यक्त करना असंभव है।

जब भरत जी भगवान श्री राम से मिलने चि[illegible] में पहुँचे तब उस स्थिति का वर्णन रामायण में निम्न [illegible] किया गया है–

चौपाईः–

कहत सप्रेम नाइ महि माथा, भरत प्रनाम करत रघुन[illegible]
उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा, कहुँ पर कहुँ निषंग धनु ती[illegible]
दोहा– बरबस लिए उठाइ, उर लाए कृपा निधान[illegible]
भरत राम की मिलन लखि बिसरे सबहिं अमा[illegible]

चौपाईः–

मिलनि प्रीति किमि जाइ बरवानी। कबि कुल अगम करम मन [illegible]
परम प्रेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति बिसर[illegible]

उपरोक्त प्रकार से मिलन की प्रीति कैसे बखानी [illegible]

सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जब [illegible] पर बिराजमान थे तब मुझे याद है एक दिन स्वामी अ[illegible] लाल जी बाहर से आये तो जयपुर में स्वामी भगत प्र[illegible] जी स्वामी अशोक लाल जी को ज्यों ही प्रणाम करने [illegible] स्वामी अशोक लाल जी ने एकदम उन्हें अपनी भुजा[illegible] लेकर हृदय से लगा लिया। यह दृश्य देखकर मुझे भरत-[illegible] मिलन के प्रसंग की अनुभूति होने लगी। वह बड़ा मनम[illegible] दृश्य था।

आलिंगन प्रेम का सजीव रूप है। श्री प्रेम प्र[illegible] ग्रंथ में गुरू महाराज जी का भजन है–

इस प्रेम को मूर्ख क्या जाने, जो माया के है दीव[illegible]

संसार के लोगों को आत्म सुख के आनंद की [illegible] खबर यदि कभी किसी महापुरूष का शुद्ध हृदय से आ[illegible] किया होता तो वह निंदा नहीं करते। महात्माओं के [illegible] कोई स्त्री–पुरूष का भेद नहीं है। वह तो शरीर स[illegible] आत्मा को ही देखते हैं।

–होतचंद नारवानी, ज[illegible]

स्वचिन्तन

भीतर की यात्रा

आज का हर मानव अपने जीवन में जीने की कोशिश तो करता है मगर उसे पूर्णतः जी नहीं पाता या यूं कहिए की जीना तो चाहता है मगर जी नहीं पाता क्योंकि मनुष्य की इच्छायें सीमित नहीं हैं। मनुष्य कितना भी दिखावा करे कि वो संतुष्ट है किन्तु भीतर ही भीतर वो जान रहा है कि मैं संतुष्ट नहीं हूँ। जीवन को जीने के लिए किसी एक रास्ते को चुन तो लेता है और चल भी देता है पर जब तक वह उस रास्ते पर कुछ कदम बढ़ता है। तब तक कोई और नया रास्ता उसके सपनों में आने लगता है। उसको लगता है कि जिस रास्ते पर मैं चल रहा हूँ इससे तो सुन्दर मेरी कल्पना का यह रास्ता है। उस रास्ते से मैं अपने जीवन को जल्दी सफल बना लूँगा। सपनों के रास्तों के लिए मंजिल बहुत नजदीक दिखाई पड़ती है। छोड़ देता है मनुष्य उस रास्ते को जो उसे कल अच्छा लग रहा था। आज उसे यह नया रास्ता पसंद आ रहा है और आने वाले कल में फिर कोई नया रास्ता पसंद आने लगेगा। अगर इस तरह से मनुष्य रास्ते बदलता रहा तो किस मंजिल पहुँचेगा। सोचने विचारने की बात है। किस तरह मंजिल मिलेगी?

हर पल बदलते रास्ते हर पल बदलती मंजिलें,
हर पल बदलती है यहां इन्सान की ये ख्वाहिशें।

एक सुख भोग नहीं पाते उससे पहले दूसरे सुख की कल्पना हम कर लेते हैं। बच्चा अभी छोटा है बोलना भी नहीं आता लेकिन उसके भविष्य की कल्पनाएँ पहले ही कर ली कि इसे डॉक्टर बनायेंगे, इसे वकील बनायेंगे, इसे इंजीनियर बनायेंगे। सपने लेने शुरू कर दिये। क्या करोगे? कैसे पहुँचोगे अपनी मंजिल पर, सपने मंजिल पर नहीं पहुँचाया करते। जब तक रास्ता तय नहीं करोगे तब तक मंजिल पर नहीं पहुँच पाओगे। स्वयं को कभी पूर्ण नहीं कह सकोगे। बाहर तो तुम पूर्णता दिखा दोगे क्योंकि बाहर की पूर्णता बहुत तुच्छ है। झूठे सपने हैं, झूठे दिलासे हैं कि मेरे पास ये आ जाये मैं पूर्ण हो जाऊँगा। एक मकान बना लूँ बस जीवन के लिए बहुत है। बस एक मारूती गाड़ी मेरे पास हो मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। मेरा विवाह एक लड़की से हो जाये मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। मेरा विवाह एक लड़के से हो जाये मैं संतुष्ट हो जाऊँगी।। मेरा बैंक बैलेंस अच्छा हो जाये सारा जीवन सुख से बीतेगा। ये बाहरी पूर्णता बड़ी तुच्छ है। भूल कर रहे हो बड़ी भारी भूल कर रहे हो।

किसी ने कहा है–

क्या वहां से लाया बंदे, क्या तू यहां से ले जाएगा।
मुट्ठी बांध के आया बंदे, हाथ पसारे जाएगा।।

कितने भी धनवान हो जाओ, कितने ही एश्वर्यों को संचित कर लो जब तक जी रहे हो तब तक ही भोग पाओगे। देह त्यागने के पश्चात् सब यहीं धरा रह जाएगा और देह के होते हुए भी चाहे 10 वर्ष का अन्न संचित कर लो। भोजन तो दो ही वक्त का कर पाओगे और पता नहीं कौन सा वक्त आखरी वक्त हो जाएगा? जीवन की कौन सी श्वांस आखरी श्वांस हो? इसलिए संचित करने में वक्त बरबाद मत करो।

ये जीवन, यह मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है, फिर पता नहीं ये अवसर मिले ना मले। इस सुनहरी अवसर को व्यर्थ की यात्रा में कल्पनाओं में मत गंवाइए। हमारे पूर्वजों ने एक कहावत कही है– **'दूर के ढोल सुहावने।'**

इन कल्पनाओं को देखकर हम इनके पीछे तो दौड़ पड़ते हैं, किन्तु जब तक तुम्हें इनके अंजाम का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जब तक ये जागृत स्वप्न टूटता है तब तक तुम बिल्कुल बर्बाद हो चुके होते हो। मैं फिर कहता हूँ कि समय का दुरूपयोग मत करो। इस माया रूपी जगत की कल्पना रूपी यात्रा असीमित है। पूरी नहीं कर पाओगे। बाहर की ये काल्पनिक यात्रा कभी मंजिल पर नहीं पहुँचाती उसके लिए यात्रा तो करनी होगी। लेकिन बाहर की नहीं भीतर की यात्रा। बस इतना ही करना है कि स्वयं का ध्यान बाहर से हटाकर बाहर की कल्पनाओं से हटाकर भीतर की वास्तविकता पर लगाना है। इस कल्पना रूपी जगत में रहकर अपनी वास्तविक मंजिल पर पहुँचना है। अपने भीतर की यात्रा आरंभ करनी है।

एक नगरी का राजा था। उसके राज्य का नियम था कि पांच साल के बाद राजा को बदल दिया जाता था

और उस राजा को पांच साल राज्य करने के बाद नदी पार करके जंगल में जाना पड़ता था। पांच वर्ष पूरे होने पर पहले दिन नगरी के द्वार पर जो पहला व्यक्ति मिलता उसी को उस नगरी का राजा नियुक्त कर दिया जाता था। उस रोज जब नगरी का द्वार खोला गया तो एक संत जी वहां से जा रहे थे। सैनिक उसे आदर के साथ राजमहल में ले गये और सारी प्रजा के सामने उन्हें राजतिलक कर दिया, राजतिलक होने के बाद उन संत जी ने पूछा सैनिकों से कि अब मैं क्या करूँ? सैनिकों ने बड़े नम्र स्वभाव से कहा महाराज आप कैसी बातें करते हो? अब आप इस नगरी के राजा हैं। पांच वर्ष तक अब यहां आपका ही राज्य है। आप हमें जो हुक्म दोगे हम वही करेंगे। ये नगरी अब आपकी प्रजा है। राजमहल और इस नगरी की एक–एक वस्तु, व्यक्ति, पद, पदार्थ पर आपका अधिकार है। आप कुछ भी कर सकते हैं। संत ने कहा– अच्छा अब मैं यहां का राजा हूँ। कुछ समय राज्य करते–करते संत ने सोचा, पांच साल के लिए मैं राजा हूँ। मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। तभी संत के मस्तिष्क में एक सवाल उठा कि पांच वर्ष के लिए मैं इस नगरी का राजा हूँ तो ठीक है, किन्तु पांच साल के बाद मैं कहाँ जाऊँगा। तभी संत ने सैनिकों को बुलाया ओर कहा कि मुझे यह बताओ पांच साल के बाद मैं कहां जाऊँगा और क्या करूँगा? सैनिकों ने उत्तर दिया कि महाराज हमारी नगरी का नियम है पांच साल के बाद राजा बदल दिया जाता है और उस राजा को जो पांच वर्ष राज्य कर चुका है नदी पार करके उसे जंगल में जाना पड़ता है। तभी संत ने कहा कि हम उस नदी व जंगल को देखना चाहते हैं। नदी पार चलने की तैयारी की जाए। सैनिकों ने कहा जी महाराज, जैसी आपकी आज्ञा और नदी पार जाने की तैयारी कर दी गई।

संत जब सैनिकों सहित नदी पार जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि उस नदी में बड़े–बड़े मगरमच्छ, बड़ी–बड़ी मछलियाँ और अन्य जलचर हैं। संत ने सोचा कि इस नदी को मैं कैसे पार करूँगा, इसमें तो घुसते ही ये जलचर मुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे। इस बात पर विचार करते–करते संत नदी के उस पार भी पहुँच गए। जंगल को देखते ही संत जी चौंक गये। जंगल में बहुत से जंगली जानवर घूम रहे थे। तभी संत जी ने सैनिकों से कहा कि ये क्या है? सैनिकों ने कहा कि महाराज ये सच्चाई है जो नदी से बचकर आ जायेगा वो इस जंगल में मारा जायेगा। तभी संत ने कहा वापस राजमहल चलो। सैनिकों ने नाव मोड़ ली। राजमहल में संत ने सोचा कि इस नगरी पांच साल का मेहमान हूँ। मुझे रहना तो वहीं है। स को बात समझ में आ गई कि यहां रह कर क्यूँ ना का सुधार कर लूँ। मैं पांच साल के लिए राजा हूँ कु कर सकता हूँ। संत जी ने सैनिकों को बुलाकर दिया कि नदी पर पुल बनाया जाए। सैनिकों ने कहा आप की आज्ञा और महाराज जी धन ? संत जी ने कि धन राजकीय खजाने से से ले लो। कुछ माह सैनिकों ने आकर संत जी से कहा महाराज पुल ब तैयार हो गया है। संत जी ने कहा कि ठीक है। अ काम करो, सैनिकों ने कहा कि जो हुक्म महाराज! कहा जो वह जंगल है उसे काटकर साफ किया जाये वहां पर इस नगरी से भी सुन्दर नगरी बनाई सैनिकों ने कहा जी महाराज और फिर जंगल को करके नगरी बनाने की तैयारी में लग गये और ढाई साल में नगरी भी बनकर तैयार हो गयी और इध जी के पांच वर्ष भी पूरे होने को थे। सैनिकों ने खबर दी कि महाराज नगरी बनकर तैयार हो चुकी है जी ने कहा बहुत अच्छी बात है कुछ दिनों में संत पांच वर्ष पूरे हो गये। संत जी ने सैनिकों से कहा कि मेरी गठरी जिसे मैं लेकर आया था। सैनिकों न कह महाराज, संत जी ने उत्तर दिया कि अब मेरे पांच व हो चुके हैं। मुझे अब नदी पार जाना है। अब मुझे चिन्ता नहीं, मैंने अपना परलोक सुधार लिया है। अब सैनिकों ने कहा महाराज अब आप चाहे यहां रहें चाहे रहो दोनों जगह आपका राज्य है।

जिस प्रकार उन संत जी ने इस नगरी में उस नगरी का निर्माण कर लिया। जहां उन्हें जाकर के लिए रहना था। मैं चाहता हूँ तुम भी अपनी बाह व्यर्थ यात्रा को छोड़कर अपने भीतर की यात्रा को करें, जहां तुम्हें जाकर रहना है। ये कहानी एक माध सच्चाई साबित करने की, हकीकत यही है कि जिस उस संत जी को वो नगरी छोड़नी थी। उसी प्रकार भी ये माया रूपी जगत छोड़कर मृत्यु रूपी नदी क करके अपनी वास्तविक नगरी में जाना होगा। कैसे जा कहाँ रहोगे? जगाओ अपने अचेतन मन को और भीतर की यात्रा को आरम्भ करो।

–हीरालाल भूरानी, ख

स्वामी हरिदास संदेश

. अपने ही अंदर जाने का अर्थ होता है शरीर से संबंध नहीं होना। पर यह सब होगा कैसे? रात–दिन प करो, जाप के द्वारा ही इस शरीर से बाहर निकलना संभव हो पाता है। यदि ऐसा हम सब के साथ जाये तो– **न कोई रोग रहेगा न कोई रोगी, न सजा, न बंधन, शरीर में प्राणों के रहते ही मुक्ति। जीवन के ते ही जीवन मुक्त।**

. अपनी इन्द्रियों के विषय को अपने अन्दर की तरफ मोड़ो। तब ही **'परम तत्व'** की प्राप्ति संभव है।''

. ''जो व्यक्ति अपने धन्धे की गहराई में नहीं जाता उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। धन्धे के सभी गुणों परिचित होने के लिए उसकी गहराई में जाना आवश्यक है।''

. ''भगवान वेदमंत्र के जप–स्मरण से प्रसन्न होते हैं। कहते हैं–उनकी रचना तो मेरे द्वारा ही की गयी तो उनके स्मरण से मैं कैसे प्रसन्न हूँ। नर–नारायण के रूप में भगवान ने हजारों वर्षों तक तपस्या की । दान से ? तो कह दिया सभी लोग जिनके पास धन है मैं ही तो देता हूँ, क्योंकि धन का भण्डार तो मैं ही हूँ। **''पत्रं, पुष्पं फलं तोयं यो में भक्त्या प्रयच्छति''** ''यदि कोई एक पत्ता, पुष्प ही दे दे तो वे प्रसन्न जाते हैं।''

5. ''विजय का अर्थ होता है, किसी पर विजय पाना। विजय दोस्तों पर या दुश्मनों पर ? दुश्मन पर जय प्राप्त करना यह तो सभी जानते हैं पर दोस्त पर विजय प्राप्त करना कुछ और बात होती है। भक्ति। ब तक दोस्तों पर विजय न पायी जाये तब तक संभव नहीं।''

प्रस्तुति –प्रीतम प्रेम प्रकाशी, जयपुर

भजन

तर्ज– हमने तुझको प्यार किया है जितना, कौन करेगा इतना.......

थलु–सत्गुरु हरिदासराम जी यादि सताए, पलि–पलि थी तड़फाए

1. प्यार दिनो जहिं अहिड़ो मूंखे, सजणु बि मुश्किल दींदो।
कींअ भला पोइ अहिड़ो सत्गुरु, दूरि अख्युनि खां थींदो।
यादि करे गुण गाल्हियूं तंहिजूं, पत्थरु भी पिघलाए, पलि–पलि.....।।

2. ऐबनि मुहिंजनि दे न निहारे, पहिंजो मुंखे बणायो।
हिक–हिक गलतीअ खातरि मूंखे, प्यार सां जहिं समझायो।
छो न रूआं तहिं सत्गुरु लाइ जींअ, बादलु जलु बरिसाए, पलि–पलि....।।

3. परम ''मनोहर'' मूरत मुहिंजे, अखड़ियुनि अग्यां फिरे थी।
पलि पलि तहिंजी सुहिणी सूरत, दिलि तां ना विसिरे थी।
तहिंजो बिछोड़ो तीर तिखे ज्यां, घाव दई थो घाए, पलि–पलि...।।

स्वामी मनोहरप्रकाश जी,
अमरापुर स्थान, जयपुर

भजन

तर्जः– कभी खुशी कभी गम

थलुः– सत्गुरू स्वामी टेऊँराम आया SSS
मेरा भोला भरम सब भगाया SSS
मैं जाऊँ गुरू पे बलिहारी
बलिहारी जाऊं मैं वारी–वारी

(1) भटक रही थी चौरासी में,
जन्म–मरण की मैं फाँसी में।
करी कृपा मुझे है छुड़ाया,
अपने आप में मुझको मिलाया।
बलिहारी जाऊँ...............।

(2) अविद्या की मोहे नींद थी भारी,
आके जगाया गुरू सुखकारी।
मोहे अपना स्वरूप लखाया,
जम जाल से मोहे छुड़ाया।
बलिहारी जाऊँ...............।

(3) सत्गुरू मेरा है सुखदाता,
सत्गुरू मेरा पिता और माता।
मोहे अपना गुरू ने बनाया,
सत्नाम साक्षी है जपाया।
बलिहारी जाऊँ...............।

(4) करी कृपा गुरू मेटि त्रासा,
अमरापुर में दीना वासा
मेरा डरना डराना मिटाया,
सबमें एको ही आतम् लखाया।
बलिहारी जाऊँ...............।

तर्जः–छदे आलस थीउ मन त्यारि रे

थलः– दींहु छन्छर मुहिंजो प्यारो आ
आयो कृष्णा जो त दुलारो आ

(1) छन्छर जो ढोढो चटणी ठांहियूं
सब मिलीकरे प्रेम सां खाऊं ओ SSS
हे प्रसाद अमरापुर वारो आ
जहिमें भरयलु अमृत प्यारो आ
दींहु छन्छर ....।

(2) छन्छर जो जेको गुरू दर ईन्दो
सत्गुरू तहिंजा दुखड़ा कटींदो ओ SSS
अहिड़ो मुहिंजो गुरू दातारो आ
दींहु छन्छर ....।

(3) छन्छर दींहु तां बलि–बलि हारी
जिंह सत्गुरू जी सूरत देखारी ओ SSS
मुहिजों सत्गुरू दाढो त सोभारो आ
जेको निशा खे प्राणनि खा प्यारो आ
दींहु छन्छर ....। –निशा प्रेम प्रकाशी, काशी

टेऊँराम सांईं, प्यारा सांईं
मां तुंहिजी आहिया सांईं
तू मुहिजो आहि सांईं
टेऊँराम सांईं, प्यारा

(1) चकोर दिसे जिअ चण्ड खे,
तिअ मां त दिसा सांई तोखे।
सच्चो प्रेम रखी तोसां,
हरपल तोखे याद करियां।
टेऊँराम सांईं, ...

(2) मछली चाहे जिअ जल खें,
तिय मां त चाहियां सांईं तोखे।
मुंहिझे जीवन जो आधार तूं ही,
मुखें तुहिंजों प्यार खपे।
टेऊँराम सांईं, ...

(3) चकवे–चकवी जी प्रीति,
जिअ जग में भारी आ।
तीअ प्रीति रखी तोसां,
निशदिन नाम जपियां।
टेऊँराम सांईं, ...

(4) पतंगो जिअ दीपक ते,
बलिहारं वञे हरबार
तीअं कुर्बान वञा मां
तव्हां ता हरपल बारम्बार
दासी जो अर्ज इयोही अथव,
पहिंजे चरननि में रखिजो
टेऊँराम सांईं, प्यारा सांईं
मां तुंहिजी आहिया सांईं
तंव्हा मुंहिजो आहियो सांईं
टेऊँराम सांईं, प्यारा सांईं

–मीनू–श्याम प्रेम प्रकाशी

मानवता के सिपाही (गीत)

हरे भरे पेड़ पोधे जो मानवता के हमस
जीवन सफर में हर डगर साथ निभाये
धूप में तपकर भी राहत भरी छांव बिख
फलते फूलते मानव जीवन के पुष्प मह
कोई टहनी टूटकर गुल्ली डंडा बन जा
कोई टहनी टूटकर बूढ़े की लाठी हो ज
जिंदगी से मौत तक जो सदा साथ नि
कभी चूल्हा जलाये कभी चिता जलाये
जख्म ए दवा जिसके जर्रे जर्रे में समाये
परोपकार की मिसाल जीते जागते नज

–प्यासा प्रेम सागर

संतवाणी (मधुर विचार)

संसारी! तुम संसार का सब काम करो, किंत मन हरी घड़ी संसार से विमुख रखो।
व्याकुल होकर उसके लिए रोने से हीं वह मिलता है, लोग लड़के बच्चे के लिए रूपये पैसे के लिए कितना रोते हैं न्तु भगवान के लिए क्या कोई एक बूंद आसू बहाता है, उसके लिए रोओ आंसू बहाओ तभी उसे पाओगे।
अपनी कमाई में से दसवां हिस्सा नहीं तो कम से कम सोलवां हिस्सा गरीबों को बांटने के लिए जरूर अलग रखो ां तो कमाई अशुद्ध होगी और उसमें बरकत भी नहीं होगी।
सब कुछ खोकर भी यदि मनुष्य भगवत् प्रेम प्राप्त कर ले और प्रभु का सानिध्य प्राप्त करने के लिए व्याकुल होजाये जानना चाहिए कि उसका जीवन सफल हो गया।
किसी को दान देकर यह मत समझो कि तुमने उस पर कोई एहसान किया है, उसे दिया है भगवान ने और वही ा है जिसको पाने का वह अधिकारी था, तुम तो केवल निमित्त मात्र हो।
यह सोचो की तुम्हारी बिसात ही क्या है, भगवान की दया के बिना अपने पुरूषार्थ से तुम क्या कर सकते हो, जो छ होता है उसकी शक्ति से, तुम तो बिल्कुल ना हो, बार–बार ऐसा विचार करने से अभिमान चला जाता है।
बड़ा आदमी वह है जिसके गुणों के कारण दूसरे लोग उसको बड़ा मानते हों, आप ही अपने को बड़ा मानना तो र्वता है।
चार बातों को याद रखो– बड़े–बूढ़ों का आदर करना, छोटों की रक्षा ओर उन पर स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह ना और मूर्खों के साथ कभी नहीं उलझना।
चार चीजें पहले दुर्बल दिखती हैं, परंतु परवाह न करने से बहुत बढ़कर दुःख के गढ्ढे में डाल देती हैं– अग्नि, रोग, ण और पाप।
). चार चीजों का सदा सेवन करना चाहिए– सत्संग, संतोष, दान और दया।
. चार गुण बहुत दुर्लभ हैं– धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निर्भिमानता।
2. चार चीजों पर भरोसा मत करो– बिना जीता हुआ मन, शत्रु की प्रीति, स्वार्थी की खुशामद और बाजारू ज्योतिषियों ो भविष्यवाणी।
3. चार चीजों पर भरोसा करो– भगवान, सत्य, पुरूषार्थ और स्वार्थहीन मित्र।

रत्न माला

–अर्जुन दास दयानी (कोटा)

ठिये–जल्दी के सारे, घर में होंगे पौबारे।
गाइये–सबेरे मँजन, रात को अँजन।
कीजिए–मालिश तीन बार, बुध, शुक्रवार सोमवार।
हाइये–पहिले सिर, हाथ पांव फिर।
खाइये–दाल, रोटी चटनी कितनी भी कमाई अपनी।
पीजिये–दूध खड़े होकर, दवा पानी बैठकर।
खिलाइये–आये को रोटी, चाहे पतली हो या मोटी।
पिलाइये–प्यासे को पानी चाहे हो ज़ावे कुछ हानि।
छोड़िये–अमचूर की [illegible] ोज की मिठाई।
करिये–आये का मा[illegible] जाये का सम्मान।
सीखिये–बड़ों की [illegible]ख और बुजुर्गों की रीति।
जाइये–दुःख में पहले, सुख में पीछे।
देखिये–माता की ममता, पत्नी का धर्म।
ब्याइये–ऐसी नार से, जो घर में रहे प्यार से।
परखिये–चाहे सबको, छोड़ देना माता को।
भगाइये–मन के डर को, बूढ़े वर को।
धोईये–दिल की कालिख को, कुटुम्ब के दाग को।
सोचिये–एकान्त में, करो सबके सामने।
बोलिये–कम से कम, कर दिखाओ ज्यादा।
चलिये–तो अगाड़ी, ध्यान रहे पिछाड़ी।
सुनिये–सबों की, करिये मन की।
दीजिए–दान जानकर, जो लेवें खुशी से मानकर।
बोलिये–जबान संभालकर, थोड़ा बहुत पहिचानकर।
सुनिये–पहले पराये की, पीछे अपने की।
रखिये–याद कर्ज के चुकाने की, मर्ज के मिटाने की।
भूलिये–अपनी बढ़ाई को, दूसरे की भलाई को।
छिपाइये–उम्र और कमाई, चाहे पूछे सगा भाई।
लीजिये–जिम्मेदारी उतनी, सम्भाल सके जितनी।
धरिये–चीज जगह पर, जो मिल जावे वक्त पर।
उठाइये–सोते हुये को नहीं, गिरकर गिरे हुए को।
तोलिये–धर्म–कर्म अपने, दिन भर में किये हैं जितने।
गाइये–सुख में राम को, दुःख में भगवान को।
भजिये–एक राम के नाम को, सबेरे और शाम को।
सोइये–पहिले करवट बांई, पीछे करवट दांई।

स्वामी बसंतराम जन्मशती समारोह धूमधाम से सम्प

अजमेर। श्री प्रेम प्रकाश दिल्ली गेट अजमेर व उसका समीपस्थ क्षेत्र 11 से 15 जुलाई 2002 तक दुल्हन की भांति सजा हुआ था। देश के विविध स्थानों से आये हुए हजारों भक्तजनों को उच्च कोटि के संत महापुरूषों–विद्वानों के श्रीमुख से वेदवाणी के अमृतप्रवाह द्वारा उनका तन मन निर्मल करते हुए लोगों को सत्मार्ग की ओर अग्रसर किया जा रहा था। भक्तजनों के लिये संत–महापुरूषों का दिव्य दर्शन पाने का सुअवसर था, प्रेम प्रकाश पंथ के आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 116वां जन्मोत्सव साथ ही वेदांत केसरी स्वामी बसंतराम जी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह।

वेदांत मर्मज्ञ पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज के पावन संयोजकत्व में बहुकुण्डीय विष्णु महायज्ञ का भव्यतम आयोजन 11–12 जुलाई को किया गया। पूज्य ब्रह्ममण्डल व संत महापुरूषों के साथ–साथ 26 जोड़ों द्वारा इस विशाल यज्ञ में सोत्साह भाग लिया गया। 12 जुलाई को ही सांय 5 बजे आश्रम से विशाल शोभा यात्रा सद्गुरू महाराज व लीलाधारी भगवान के विभिन्न रूपों की मनोहारी झांकियों के साथ निकाली गयी। "हरे कृष्ण हरे राम धनगुरू टेऊँराम" की पावन धुनि के साथ संत राजूराम जी नगरवासियों की जिव्हा को ह संकीर्तन के साथ पावन कर रहे थे। पूज्य ब्रह्मानंद जी महाराज, स्वामी अशोक प्रका महाराज, सफेद अश्वों वाले एक रथ में वि होकर नगर वासियों का अभिनंदन स्वीकार क आशीर्वाद दे रहे थे।

प्रतिदिन प्रातः सांय सत्संगामृत का रसा हजारों प्रेमियों द्वारा बड़े ही मनोयोग के साथ गया। 13 जुलाई को 117 बालकों का स उपनयन संस्कार (जनेऊ), वास्तव में इन ब उनके परिवार के लिये ये क्षण परम सौभाग्य रहे। जब पूज्य संत मण्डल के सानिध्य में प्रेमी पवित्र जनेऊ संस्कार के साक्षी रहे। जा के अनुसार इनमें से 65 बालक तो अन्य नग जनेऊ संस्कार में सम्मिलित हुए।

15 जुलाई को पाठों के भोग, भण्ड सांयकालीन सत्संग सभा में पल्लव के साथ महोत्सव व शताब्दी समारोह का समापन गया। इस महोत्सव में पूज्य स्वामी देव प्रका महाराज, स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज किशोर प्रकाश जी संत राजूराम जी, संत प्रकाश (कटनी) सम्मिलित होने वालों में प्रमुख

सूरत में भी स्वामी बसंतराम जी महाराज का शताब्दी जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया ग

स्वामी टेऊँराम आश्रम, रामनगर, सूरत में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्मोत्सव एवं स्वामी बसंतराम जी महाराज का शताब्दी जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया।

शुक्रवार दिनांक 27.07.2002 को श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहेब पाठ का आरंभ हुआ और उसी दिन सुबह एवं सांय को सत्संग किया गया।

शनिवार के दिन दिनांक 28.07.2002 प्रातः 6 बजे से 8 बजे तक एक प्रभात फेरी का सुन्दर आयोजन किया गया जिसमें सत्गुरू महाराज की झांकियों एवं बैंड बाजों के साथ गलियों में रामधुन की मौज मच गई थी। प्रत्येक प्रेमी प्रभात के समय अपनी–अपनी मस्ती में झूम रहा था मानो कि सभी ने सुध बुध खो ही डाली थी गुरू की भक्ति में। प्रे प्रेमी सही लेकिन गुरू भक्ति के प्रेम में पागल राजूराम भी सड़को पर नृत्य करते हुए धुनी ल सभी प्रेमियों को मस्त मस्त कर दिया था। अशोक प्रकाश भी प्रेमियों के साथ मिल गये अपने बग्घी के स्थान से नीचे उतरकर प्रेमि साथ चलने लगे। ऐसा महसूस हो रहा था वि टन्डे आदम और खन्डू का दृश्य रहा हो। प्रभात सम्पन्न होने के बाद दरबार में सत्संग किया जिसमें जिज्ञासुओं ने स्वामी अशोक प्रकाश जी म के मुखारविन्द से शनिवार के दिन स्वामी टे महाराज के जीवन की महिमा सुनकर मगन ह सारा पंडाल स्वामी टेऊँराम की जय जयक गूंजने लगा जैसे प्रभू की लीला जमीनं पर

टेऊँराम आश्रम, रामनगर, सूरत में आ गई हो। उसी दिन सांय 5.00 से 7.00 तक सत्संग हुआ और वही दृश्य देखने का अवसर मिला और प्रसाद में ढोढो चटनी खाकर सभी के मुंह से वही शब्द निकल रहे थे "वाह स्वामी टेऊँराम वाह"।

उसी दिन शनिवार रात्रि 1.00 से 12.00 तक फरीदाबाद से राजकपूर एवं पार्टी का संगीतमय भजनों का आनंद भी प्रेमियों ने लूटा।

तीसरे अंतिम दिन रविवार को सुबह 9 से 12 तक सत्संग हुआ जिस स्वामी ब्रह्मानंद महाराज, स्वामी अशोक प्रकाश महाराज, स्वामी किशोरलाल सन्त राजूराम, संत मोहन, संत दिलीप, एवं और भी भगतों एवं गुणीजनों ने स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वांमी बसंतराम महाराज के जीवन अमृत का गुणगान किया और सभी को स्वामी टेऊँराम महाराज के दिखाये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा की। बाद में आम भण्डारा हुआ जो शाम 4:00 बजे तक चला। जिस में नवसारी, बड़ौदा एवं इन्दौर से आये हुए प्रेमियों ने हजारों स्थानीय प्रेमियों के साथ भोजन प्रसादी ग्रहण किया और अपने आपको धन्य किया।

उसी दिन सांय 6:00 बजे से 9:00 बजे तक सत्संग हुआ। जिस में प्रेमियों की भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि लोग रास्तों पर भी खड़े हो गये थे। संतों का सत्संग मंच भी एक सुन्दर तरीके से सजाया गया था। एंक पहाड़ पर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मूर्ति एवं दूसरे सत्गुरु की मूर्तियों को वहां पर विराजमान किया गया था। 116 दीपों को प्रगटाकर केक काटकर खुद संत शिरोमणि भी प्रेमियों के साथ प्रेम में नाचने लगे वह किसी के भी काबू में नहीं था सभी अपने अपने मस्ती में झूम रहे थे। कोई किसी की सुनता नहीं था। कई प्रेमी तो संतों के साथ मंच पर भी चढ़ गये और संतों के साथ नाचने लगे। वह एक कल्पना से दूर दृश्य था। अंत में पल्लव पाकर मेले की पूर्णाहुति की गयी।

—रमेश राजपाल, सूरत

भजन

तर्जः—रिमझिम के गीत सावन गाऐ—गाऐ

भरदे रे श्याम झोली भरदे—भरदे
ना बहलाओ बातों में
भरदे रे श्याम झोली भरदे

(1) दिन बीते बीती रातें, अपनी कितनी हुई रे मुलाकातें
तुझे जाना पहचाना, तेरे झूठे हुए रे सारे वादे,
भूले रे श्याम हमको भूले, क्या रखा है बातों में
भरदे रे श्याम ....।

(2) नादान हूँ, अन्जान हूँ श्याम तू ही तो मेरा भगवान,
तुझे चाहूँ हूँ, तुझे पाऊँ, मेरे दिल का यही अरमान है,
पढ़ले रे श्याम दिल की, पढ़ले सब लिखा है आँखों में
भरदे रे श्याम ....।

(3) मेरी नईया ओ कन्हैया, पार करदे तू बनके खिबैया,
मैं तो हारा गम का मारा, आजा—आजा ओ बन्सी बजईया
ले—ले रे श्याम अब तो ले ले मेरे हाथ हाथों में
भरदे रे श्याम झोली भरदे—भरदे
ना बहलाओ बातों में

प्रस्तुति—मीनू—श्याम प्रेम प्रकाशी
जयपुर (राजस्थान)

कुछ अनुभूत नुस्खे

जोड़ों का दर्द

1. जोड़ों पर नीबू का रस मलते रहने से दर्द व सूजन कम हो जाती है।
2. कच्चे आलू को बिना छीले टुकड़े कर रस निकाल तुरंत पीने से बहुत लाभ होता है। आलू एक ही 50—75 ग्राम का हो, धोकर बिना छीले कदूकस करके भी रस निकाल सकते हैं।
3. अपने आयु के बराबर अर्थात् जिस की आयु 40 वर्ष है उसी को 40 नग मेथीदाना प्रातःकाल धीरे—धीरे खूब चबा चबाकर खाने से जोड़ों के दर्द में बहुत ही आराम हो जाता है व निरन्तर लेते रहने से सदैव निरोगी बने रहेंगे।
4. दूध में एक छोटा चम्मच हल्दी व वही छोटा चम्मच देसी घी डालकर गर्म गर्म पीने से कुछ ही दिनों में जोड़ों का दर्द नष्ट हो जाता है।

—कृपालदास सुगनोमल गुलवाणी
69/6 नेहरू नगर वेस्ट
जिला दुर्ग (छत्तीसगढ़)

स्पेन में अमृत प्रवाह

ज्ञान सत्संग चर्चा

पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली के मुखारविन्द से सत्नाम साक्षी मंदिर लासपालमास स्पेन में निःसृत अमृत प्रवाह

सत्नाम साक्षी मंदिर, लासपालमास स्पेन सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी संसार की सत्यता को छिन्न–भिन्न करते हुए, और गुरु प्रेम की अमरता के रस को छलकाते हुये अमृतोपदेश कर रहे हैं।

गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कहे टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय।।

थलु– स्वामी टेऊँराम वञां तोतां सदा बलिहारी।
छो त तुहिंजी आ मिठा, सूरत प्यारी प्यारी
तू निमाणनि जो धणी कोन दिठो बियो रखबारो
सारी दुनिया थी जपे, नाथ तुहिंजो नालो
तुहिंजी वाणी थी दिये, दिल खे सदा दिलदारी

प्रेम का रंग भक्ति का रंग महापुरुषो के संग से लगता है और दुनिया का रंग मन पर जल्दी चढ़ता है।

भांग तम्बाकू सुरा पान उतर जात प्रभात।
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।
लगन लगी जब राम से क्या लोकन से काम।
टेऊँ मोहि न भावहीं, खान पान आराम।।

सच्ची लगन राम से लग गई, स्थिति बन गयी फिर दुनिया नहीं हिला सकती, परमात्मा ने बुद्धि के नेत्र खोल दिये, सच्चा विवेक जगा दिया। समझ दे दी। जिससे सन्तों की भाषा, संतो के इशारे, सन्तो के वचन समझ में आने लग जायें ? क्योंकि संत अमरलोक की बातें बताते हैं। इशारों में गुप्त रहस्य की बात कह देते हैं।

समुझी–समुझी वणिज कजांइ, उते गूंगनि जी गुफ्तार थई।
वेहु न मुसाफिर वाट ते, खुली बंदर जी दरबार थई।

कोई विरला ही महापुरुषों की बोली और इशारे समझ सकता है।

कानों से सुनकर भी, आंखों से देखकर भी, बुद्धि समझना नहीं चाहती।

रातों दींह छिके चढ़ियो कालु कुलहनि ते।
समे साणु सभिनी खे नींदों साणु छिके।।
तोणे वञी लिके सामी लंका कोट में
मन भजे थो बियनि गाल्हियुनि में,
संसार मां मिलणो कुछ कोन आहे,
घर में उन्हींअ खे गोल्हि,
जिते तोखे हलणो आहे गाल्हि बुधी,
पहिंजे गोठ जी, दिलधारी करि,
होशयारी करि, हलणो थई पहिंजे देश में

यात्रा पर जाना हो तो कितने दिन पहले से ही सामान इकट्ठा करते हैं। इसी तरह परलोक जाने के लिये भी जो बनाना है अभी बना लो। क्योंकि समय गंवाने से स्वांसों का धन खत्म हो जायेगा। बचपन, प्रभात की तरह, जवानी दोपहर की तरह, बुढ़ापा शाम रात की तरह ढल जायेगा। फिर कुछ हाथ नहीं लगेगा। काल रूपी रात्रि आ जायेगी। अंधकार हो जायेगा। उस अंधेरे में तुझे अकेले जाना होगा।

दुनिया चार दिहाड़ा चुटिको
आहे ख्याल जो खाली खुटिको
तहितें मस्त न थीउ, पीउ तूं प्यारा पीउ
श्री राम नाम रस पीउ

विचार से ख्याल बनता है। ख्याल से सृष्टि बनती है। उसी से मन की दशा बनती है। उसी ख्याल को बदलकर सत्य की ओर अग्रसर कर देने से प्रेम का प्याला प्राप्त होता है।

चाम दाम का है यह नाता
नाता किससे कौन निभाता

इस मार्ग को जानकर, संत–महापुरूषों सत्गुरु के वचनों पर विश्वास करके उनके बताये सत्मार्ग प

चलेंगे तो पार निश्चित पहुँचेंगे।

भलु बादल मींहु वसाए, सभ कपिड़ा अंग पिसाऐ
तबि वेन्दुसि पाणु पुसाए, दाढी सत्गुरु जी सिक आहे
दिल दर्शन लाइ वाझाऐ

दुखनि जी बरसात, भली थिये पर गुरुअ जे रस्ते हली मिलिणो आहे।

चाहे इस राह में दुखों की बरसात हो, पर फिर भी परमात्मा से मिलना है। क्योंकि ये मनुष्य जन्म बार–बार नहीं मिलेगा।

बड़े भाग मानुष तन पावा
सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थनि गावा

इन्द्रिय सुख, जैसे जबान को आम का स्वाद मिल रहा है पर है अनित्य, नित्य सुख तो संसार के वैराग्य से ही मिलेगा। सच्चा आनंद भी वहीं से मिलेगा।

जै जै टेऊँराम स्वामी
कृपा करो प्रभु अन्तरयामी

इसके पूर्व सन्त लक्ष्मण प्रेम प्रकाशी जी ने **"जानो अपर अपार महिमा सत्संग की"** व सन्त नरेश प्रेम प्रकाशी जी ने **"दुनिया में जीव भुलिजी दातार ना भुलायो"** भजन गाकर सत्संग व प्रभु की महिमा सुनायी। सन्त जयदेव जी महाराज ने अमृत पिलाते हुए कहा कि–

उथी साझुरि जागु सवेलो ओ बंदा अथी राम जपण जो वेलो
1. अहिड़ो वक्तु वरी ना मिलन्दुइ छो थो हथऊं विञाईं
भोग रसनि में भोग भुलिजी पोइ मतां पछुताई
करि मानुष जनमु सुहेलो
2. थोड़े जीअण खातरि जग में छो थो पाप कमाईं
पापनि जो फलु दुखु थी दाढो सोचे दिसु मन मांही
हिता वेन्दे रोअन्दो अकेलो
3. कूड़ कपट ऐ कुविद्या सां थो मूर्ख माया जोड़ी
सत्गुरु संतनि ईश्वर खां तू छोथो मुंहड़ो मोड़ी
हले साणु न पैसो अधेलो
सोये अविद्या नींद में कहे टेऊं बहुकाल
अब तो गफलत छोड़के, सुमरो दीनदयाल
बहुत जनम बिछुड़े थे माधव एह जनम तुम्हारे लेखे
करनो हुतो सो ना किया पड़ियो लोभ के फन्द
नानक समयो रम गयो अब क्यो रोवत अन्ध
जिस काज लिये यह जनम धरा सो कार्ज अब तक
नाहिं किया, अवर काज तेरे किते न काम
मिल साध संग भज केबल नाम
मास हदनि जी हीअ देही जा तो शौक रखी सींगारी आ
पांच तत को तन रचियो जानहु चतुर सुजान
जिंह ते उपजियो नानका लीन तांहि में मान

तेरा अनमोल जीवन यों ही जा रहा है किस ओर तेरी मंजिल किस ओर तू जा रहा है।

स्पेन (लासपालमास) में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का वर्सी उत्सव

परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का वर्सी उत्सव 10 से 14 अगस्त 2002 तक लासपालमास (स्पेन) के सत्नाम साक्षी मंदिर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता व सन्तमण्डल की उपस्थिति में मनाया गया।

इस अवसर पर सत्संगामृत की ज्ञानगंगा का पान, वर्सी उत्सव में सम्मिलित सैकड़ों प्रेमियों को कराया गया। सत्संग सभा की शुरूआत करते हुए सन्त नन्दलाल जी ने पूज्य सत्गुरुदेव भगवान को इस भजन के माध्यम से स्मरण करते हुए बताया

दर्द वारनि संदियू अखिरियूं रहनि थियूं आब में आलियूं

सन्त परसराम ने सद्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन इस भजन के माध्यम से किया–

स्वामी सर्वानन्द सुखदायी है, सदा सबसे करत भलाई है

इसके पश्चात सन्त हरीओमप्रकाश जी ने पूज्य गुरुदेव भगवान के श्रेष्ठ गुणों का वर्णन इस प्रकार किया–**जोगी त मुंहिजे जीअ जा जानी**

भजन गाते हुए बताया, कि सादगी, सरलता, विनम्रता, उदारता, त्याग, तपस्या, गुरुभक्ति इत्यादि सद्गुण

हमें पूज्य स्वामी जी के जीवन से सीखने चाहिये।

कुछ ज्ञान उनके प्रवचनों से मिलता है तो व्यवहारिक ज्ञान उनके आचरण रहन सहन से हमें मिलता है। अतः हम सभी को ऐसे दिव्यतम महापुरुषों के दिखाये हुए मार्ग पर चलकर सद्‌गति प्राप्त करनी चाहिये।

सन्त नामदेव जी महाराज सत्संग सभा को आगे बढ़ाते हुए अपने सदुपदेश में बताते हैं–

सत्गुरु अपनी कृपा धारो, मेरे सभई दुख निवारो

सन्तों महापुरुषों के वचनों को ध्यान से सुनकर उसे बुद्धि में धारण करके, उसका आचरण अपने जीवन में करना चाहिये। ज्ञान व विवेक को अपना मित्र बनाकर हमें शास्त्र अध्ययन व सत्संग सुनना चाहिये जिससे हमारी राह रोशन होती रहे।

मेरे श्याम कन्हैया की खबर कोई लावे री
किससे पूछूं कोन बतावे कोई तो मुझको राह बतावे
बंसी बजईया की खबर कोई लावे री

सन्त–सद्‌गुरु के वचनों को सुना तो सही, लेकिन समझा नहीं तो फिर आत्मशान्ति कैसे प्राप्त होगी ?

हून्दे यादि स्वामी सर्वानन्द प्यारा
जयपुर जा जोगी जीअ जा ज्यारा।
अमरापुर तुहिंजी अमर निशानी,
वहे ज्ञानु गंगा थी दियनि ज्ञानु ज्ञानी।
जीअनि जोगीअड़ा मन को भेरो कनि,
मन को भेरो कनि जीऊ जीयारियो आ जनि।।

इसके पश्चात् अपनी सारगर्भित मृदुल वाणी में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सत्संग सभा को ज्ञानामृत का रसास्वादन कराते हुए कहते हैं

जग सुमरण दुख रूप है, देवत चिन्त महान
सुमरण सत्गुरु देव का सर्व सुखों की खान

भजन–पवनि यादि पलि पलि प्रीतम प्यारा
विसारिया न विसरनि सजण से सूहारा
जदहिं खां जुदाई कई आहे जोगिनि
तदहिं खां अखियुनि में वहनि नीर नारा

इन्सान के अन्दर परमात्मा ने एक अद्‌भुत शक्ति रखी है। **"स्मरण शक्ति"** जिससे वो अतीत की बातें मुलाकातें याद करके चिन्ता द्वेष राग वैर करता है। खुद को जलाता है। पर अगर वह इसी स्मरण शक्ति से लाभ लेना चाहे तो सद्‌गुरु सन्तों के वचनों को यादों को सानिध्य(याद) करे। जिससे उसे आनन्द और शान्ति मिलेगी।

सूरत से सीरत भली, बिना पंख उड़ जाय।
सूरत तो जाती रही, कीरत कबहूँ न जाय।।

कीरत माने यश, अमर है आदमी का कृत्य ही, मनुष्य के गुण ही उसे लोकप्रिय बनाते हैं। सूरत भले याद न रहे। पर व्यक्ति के गुण सदेव स्मरण किये जाते हैं। गुणवान व्यक्ति के गुणों की खुशबू का पंछी बिना पंखों के होते हुए चहुं और घूम आता है। वक्त की मार से, समय की मार से सूरत ढल जाये पर सीरत यानि कीर्ति, गुण नहीं ढलते और परवान चढ़ते हैं। ऐसी सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज की कीर्ति अमर है। बचपन से संतों का संग किया। नाम में वृति को जोड़े रखा। खूब सेवा की।

नढपणि खाँ राम नाम जो पीतो हो प्यालो।
तृष्णा खे करे तर्क, कयो अंदर उजालो।
संसार में रही भी, रहयो सभखाँ निरालो।
जुहदनि साँ करे जोग कयो अमर हो नालो।
सफली कई देही त कई स्वामी सर्वानन्द
सेवा कई सत्गुरु जी, कई त स्वामी सर्वानन्द
भक्ति कई सत्गुरु जी, कई त स्वामी सर्वानंद

नाम स्मरण करने से अंदर ज्ञान की ज्योति जल जाती है। जिसकी रोशनी से जीवन में उजाला हो जाता है। हमारे जीवन में और महापुरुषों के जीवन में जो फर्क है यही है।

धणीय, धणीय थे जिन समझायो
मन खे धीरज दियण वारा याद पवनि

वे पल–पल खुद को समझाते हैं। वे सन्त सदैव याद आते हैं। जिन्होंने मन को धीरज दिया, फिर मन को मोह लिया, बस उन्हीं का स्मरण, उन्हीं का चिन्तन स्मरण शक्ति में स्मृत रहे। **(यात्रा से प्राप्त)**

अमरापुर समाचार दर्शन

पावन गुरू स्थल पर मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

गुरू शिष्य की परम्परा अभी से नहीं है। अपितु अनादि काल से चली आ रही है प्राचीन समय से शिष्य गुरू आश्रम में जाकर विद्या अर्जन करते थे, तब गुरू पूजा का अत्याधिक महत्व था। गुरू पूर्णिमा के दिन सभी शिष्य बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा अर्चना करते थे। गुरू से आशीर्वाद प्राप्त कर अपने आपको धन्य-धन्य मानते थे। गुरू द्वारा ही शिष्य के अन्धकार को हटाया जाता है। उनमें प्रकाश की ज्योति जागृत करते हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि –

सूर्य की तपत कितनी क्यों न हो सूर्य एक से अधिक क्यों न हो, चन्द्रमा कितने ही क्या उगे, किन्तु बाहरी प्रकाश ही करते हैं। आन्तरिक प्रकाश पाने के लिए गुरू की आवश्यकता होती है।

गुरू बिना जीवन अन्धकार मय है। अन्धकार में उज्जवलता लाने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है वह प्रकाश गुरू द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

"तमसो मा ज्योतिर्गमयः"

जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जावें वही गुरू है। गुरू का अर्थ है।

गु=अन्धकार, रू=प्रकाश

रामायण में बताया जाता है कि श्री गुरू के नखों की भी वन्दना करनी चाहिए। श्री गुरू के नख मणि के समान होते हैं जिस प्रकार मणि के प्राप्त होते ही चारों ओर प्रकाश हो जाता है उसी प्रकार गुरू के नखों की वंदना करने से हृदय में प्रकाश हो जाता है।

अतः गुरू का दर्जा सबसे अधिक बताया जाता है। शिष्य गुरू परम्परा को सभी धर्म स्वीकार करते हैं। इसी कारण अभी तक "गुरू पूर्णिमा" पर्व की प्राचीन परम्परा कायम है और सभी भक्त जन बड़े श्रद्धा भाव से गुरू पूर्णिमा पर्व मनाते हैं।

ऐसे ही पावन गुरू पूर्णिमा का पर्व 24 जुलाई बुधवार के दिन पवित्रतम गुरू तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान में मनाया गया इस पावन दिवस पर प्रभात वेला में ही श्री दरबार पर जिज्ञासु आने लगे। आज श्री दरबार की शोभा बड़ी ही मनोहरकारी लग रही थी।

गुरूमुख द्वार से ज्यों ही सत्संग हॉल में प्रवेश किया तो पीत वर्ण के शामियाने से पूरा सत्संग परिसर पीताम्बरी लग रहा था। वहीं सत्संग मंच के मध्य में बना प्रकोष्ठ पुष्पों की सजावट से शुशोभायमान लग रहा था। जिसमें रखी इष्टदेव लक्ष्मीनारायण, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानंद जी महाराज, स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज और स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रतिमा ने नो प्रेमियों के हृदय को मंत्र मुग्ध ही कर दिया था।

वहीं श्री मंदिर व समाधि स्थल की आभा भी कम नहीं थी समाधि स्थल पर पुष्पों की सजावट बड़ी उत्कृष्ट लग रही थी। श्रद्धालु प्रभात वेला में श्री दरबार आकर अपनी प्रगाढ़ गुरू भक्ति का परिचय दे रहे थे।

श्री दरबार में 5.30 बजे से विशेष पूजा शुरू हुई जिसमें सभी सन्त श्री व श्रद्धालु गण शामिल हुए। सर्वप्रथम पुजारी जी द्वारा गुरू महाराज जी की प्रतिमा का पंचामृत से अभिषेक कराया गया तथा नूतन वस्त्राभूषण पहनाये गए तत्पश्चात् श्री फल एवं मिठाई अर्पण कर उनकी श्री आरती उतारी गई।

प्रातः 7 बजे जैसे ही प्रार्थना के स्वर श्री दरबार में उच्चारित हुये तो श्री दरबार का सौम्य वातावरण मधुरकारी हो गया प्रेमीगण शीघ्रातीशीघ्र आकर गुरू की पूजा करने लगे। वहीं दूसरी तरफ सन्तों द्वारा श्रद्धालुओं को गुरू की महिमा का व्यांख्यान किया जा रहा था। फिर प्रातः 8.30 बजे पूज्य सदगुरू सर्वानंद जी महाराज के प्रवचनों का कैसेट्स चलाया

गया।

प्रवचनों की समाप्ति के पश्चात् सभी सन्तगण व श्रद्धालु हवन कुण्ड के आगे इकट्ठे हुए जो पहले से ही सेवाधारियों द्वारा सजाया गया था। गुरू महाराज व यज्ञ पुरूष भगवान की जयकार के साथ यज्ञ शुरू हुआ। लगभग एक घन्टे की मन्त्रोचारण के पश्चात् पूर्ण आहुति देकर इस यज्ञ की समाप्ति की गई।

अब समय था सन्त मण्डल द्वारा गुरू महाराज की बाहरी प्रतिमाओं की पूजा अर्चना का। गुरू प्रार्थनाष्टक के स्वर के साथ संतों ने सत्गुरू महाराज की प्रतिमा को तिलक लगा कर श्रीफल व मिश्री हार चढ़ाकर गुरू पूजा की। इसके पश्चात् सभी श्रद्धालुगण कतारबद्ध होकर गुरू महाराज की पूजा अर्चना के लिए खड़े हो गये।

आज हर एक श्रद्धालु आचार्य श्री की पूजा अर्चना करना चाहता था। सत्यनारायण भगवान की आरती व धुनि लगाकर सत्संग की समाप्ति की और शुरू हुई श्री दरबार की परिक्रमा। आगे–आगे संत मण्डल और बीच में सुसज्जित चौपहिया वाहन जिसमें सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज की मनमोहित प्र विराजित की गई इसके पीछे माताऐं बहनें प्रेम होकर हाथों से करतल व मुख से धुनि लगाती चल रही थीं। श्री महाराज के कक्ष से यह परि शुरू हुई और लगभग आधा घन्टे का समयावधि साथ यह परिक्रमा पुनः गुरूमुख द्वार पर अ समाप्त हुई इसके पश्चात् आम भण्डारा हुआ जि असंख्य श्रद्धालुओं ने भण्डारा ग्रहण किया।

आज श्री दरबार को रात्रि 10 बजे तक र रखा गया ताकि प्रेमीगण अपनी सुविधानुसार दरबार आकर गुरू की पूजा कर सकें।

इसी प्रकार, समस्त भू–मण्डल पर प्रेम प्रका द्वारा गुरू पूर्णिमा जैसे महापर्व पर श्री सद्गुरू मह जी का विशेष पूजा अर्चन कर श्रद्धा भाव से उत्साह यह उत्सव मनाया गया, विशेष सत्संग सभाअ वक्ता संत महापुरूषों ने गुरू महिमा विषय पर भ को सत्संगामृत का पान कराया। कई आश्रमों पर य यज्ञ, भण्डारे के कार्यक्रम भी किये गये।

–गुड़िया प्रेम प्रकाशी, जयपु

जयपुर के योगीराज सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव सम्प

संतों की महिमा वेद न जाने
जे ता सुने ते ता बखाने

संतों के गुणों का बखान करना असंभव है। संतों के जीवन रूपी सागर में इतने गुण होते हैं कि सात जन्म लेकर भी उनके गुणों का बखान नहीं कर सकते हैं। ऐसे ही त्याग तपस्या की मूर्ति सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज थे जिनके गुणों का बखान करना इस लेखनी के बस की बात नहीं है।

ऐसे महापुरूष का निर्वाण दिवस उन्हीं की तपःस्थली श्री अमरापुर दरबार में भी मनाया गया, बीती स्मृतियों को पुनः उजागर करने के लिये मनाया गया स्वामी जी का निर्वाण दिवस।

शनिवार का पावन दिन धन्य हो गया एक तो आचार्य जी का पावन अवतरण दिवस व दूसरा आचार्य श्री के परमशिष्य स्वामी सर्वानंद जी मह के निर्वाण दिवस का प्रथम दिवस।

शनिवार का महान दिन शीतकाल का आ कराती सौम्यकारी, नैसर्गिक प्राकृतिक छटा से प चारों और हरित हरियाली की पावन वेला में प्रा बजे से प्रार्थना की गूंज के साथ स्वामी जी निर्वाण दिवस शुरू हुआ।

श्री दरबार में मंच पर आसन बनाया जिसमें महाराज श्री की प्रतिमाओं को विराज किया गया था। वही सत्संग मंच पर अनेक संत शोभा पा रहे थे। संतों के प्रवचन के पश्चात् श्री प्रकाश ग्रंथ, श्रीमद् भगवत गीता के पाठों का शु कर आरती, धुनि लगाकर प्रातःकालीन सत्संग समाप्ति हुई। इसी प्रकार शाम को 5 से 7 बजे

भजन संध्या हुई जिसमें संतों द्वारा सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज के गुणों का गुणगान किया गया तथा सतनाम साक्षी महामंत्र का 108 बार जाप किया गया आज श्री समाधि स्थल पर पुष्पों की मनोहरकारी सजावट देखकर प्रेमियों का हृदय प्रफुल्लित हो उठा।

इसी प्रकार 11 से 13 अगस्त तक प्रातःकाल व सांयकाल भजन संध्या हुई जिसमें पूज्य सद्गुरू महाराज के अमृत प्रवचनों का कैसेट्स चलाया गया। 14 अगस्त आज स्वामी सर्वानंद जी महाराज की पुण्यतिथि का दिन था। आज श्री दरबार में पीतवर्ण के शामियाने से पूरा सत्संग परिसर पीताम्बरी लग रहा था। देखा जाये तो जयपुर वासियों के अहोभाग्य हैं जो एक लम्बे समय तक पूज्य स्वामी जी का अमृत सानिध्य मिला एवं उन्हीं के अमृत प्रवचनों का पान कर प्रेमीजन गोपियों की भांति आज भी उनकी मधुर वाणी का अपरोक्ष श्रवण कर अपने आप को धन्य मान रहे हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना के स्वर के साथ ही दरबार का नीरस वातवरण गुंजायमान हो उठा। संतों ने अपने अमृत प्रवचन में बताया कि–

भजन–देखा जग में संत उदारी, सारग्राही सत विचारी।

चौरासी लाख योनि में जितने भी चेतन देह हैं उनकी मृत्यु अवश्य होती है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने बताया कि जो भी संसार में आया है उसकी मृत्यु अवश्य होगी। ऐसे ही महापुरूष वैसे तो सदा अजर अमर होते हैं। परन्तु वह इस मृत्युलोक में अवतार लेकर आते हैं और अधर्म, अन्याय को हटाकर सत्य मार्ग पर चलने की राह देते हैं। जगह–जगह नाम सुमरन का प्रचार करते हैं और उनका जब कार्य पूर्ण हो जाता है तो वह इस संसार को त्याग कर अमर हो जाते हैं। उनका इस संसार में आने का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता वह तो सांसारिक कल्याण के लिऐ ही आते हैं।

महापुरूष स्वार्थ रूपी संसार में रहकर भी स्वार्थ से परे होते हैं। वह संसार में रहकर सार वस्तु को ग्रहण और असार वस्तु का परित्याग करते हैं वह हमेशा खुद के अवगुण देखते हैं। महापुरूष हमेशा उदार चरित्र वाले होते हैं। उनमें से ही एक सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज थे। उनकी महिमा का जितना गुणगान करें कम है। स्वामी जी में अनंत गुण हैं यदि उनमें से हम भी अपने जीवन में एक गुण अपना लें तो हमारा बेड़ा तर जायेगा।

संतों के प्रवचन के पश्चात् स्वामी जी के प्रवचनों का कैसेट्स चलाया गया और आरती करके व धुनि लगाकर एवं आम भण्डारे के साथ निर्वाण दिवस की समाप्ति की गई।–**बन्टी प्रेम प्रकाशी, जयपुर**

मनाया गया सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज का जल समाधि दिवस

महापुरूषों की जीवन वाटिका में अनंत गुणों रूपी पुष्प खिलते हैं उन पुष्पों की सुगंध से केवल उनकी जीवन वाटिका ही सुगंधित नहीं होती, लेकिन वह दिव्य खुशबू दिग दिगान्तरों को भेदते हुये त्रिलोक में व्याप्त हो जाती है। उस सुगंध से खिचें कई जिज्ञासु भंवरे सांसारिक वैभव का परित्याग करके अपना सर्वस्व लुटाने को आतुर होकर उन दिव्य पराग कणों से सुगंध का एकाध झोंका उठाने को तत्पर रहते हैं। उस दिव्य उपवन से टकराकर बहने वाली हवायें भी दिव्य संदेश देती हैं।

ऐसे संत महापुरूषों की अलौकिक सुगंध चहुँ ओर व्याप्त है। जगह–जगह उनकी अलौकिक आभा बिखर रही है। उन ही महापुरूषों में से एक हैं सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज। आज भी उनको बड़े श्रद्धा के साथ याद किया जा रहा है। पावन श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में, 10 से 14 अगस्त तक महाराजश्री की 25 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। प्रत्येक वर्ष की भांति 2 दिवसीय जल समाधि दिवस भोपतवाला हरिद्वार स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम में मनाया गया।

बुधवार सांय जयपुर से श्रद्धालुगण हरिद्वार के लिये प्रस्थान करने लगे। 15 अगस्त हरिद्वार में स्थित आश्रम पर "संत भण्डारा" का आयोजन हुआ अनेक संत महात्माओं व श्रद्धालुओं ने भण्डारे में प्रसादी ग्रहण की। इसी प्रकार सांयकालीन सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें सर्वप्रथम आरती और उनके पश्चात् भगत खेमचन्द, भगत मूलचंद, संत श्यामलाल एवं संत मोनूराम जी ने अपने अमृत प्रवचन में सद्‌गुरू सर्वानंद जी महाराज के गुणों का बखान किया और कहा कि वैसे तो स्वामी जी में अनंत गुण थे परंतु पांच गुण विशेष रूप से विद्यमान थे।

(अ) सत्संग, (ब) त्याग, (स) सादगी, (द) गंगा मैया से प्रेम, (ई) गुरू भक्ति

संतों ने स्वामी जी द्वारा गाये भजन जिनमें **"सुनिये दीनानाथ प्रभु अर्ज है हमारा, अभय दान दीजिये गंगा का किनारा", "सद्‌गुरू स्वामी सृजनहारा देवो सदा मुझे गंगा का किनारा"** आदि भजन गाकर गुरू महाराज की स्मृतियों को ताजा कर दिया।

16 अगस्त शुक्रवार को "महाराज श्री" को "जल समाधि दिवस" था आज ये पावन हरि की नगरी मनमोहक लग रही थी। प्रातःकालीन सभी आश्रमों मंदिरों में से शंख–नाद, घाटियों आरती व गंगा मैया की करतुल झीनी–झीनी ध्वनियां सुनाई दे रही थी। चहुं ओर प्राकृतिक नजारे, हरियाली, नैसर्गिक वातावरण, सुरम्य पावन संतों का सानिध्य और गंगा मैया का दर्शन आदि सुखद अनुभूति का आभास करा रहे थे।

प्रातःकाल की भोर के साथ आश्रम में भी प्रार्थना संकीर्तन की गूंज सुनाई दी जाने लगी। सभी भक्तगण प्रातः 6 बजे सत्संग हॉल में बैठकर सत्संग प्रार्थना के सरोवर में डुबकी लगा रहे थे। सर्वप्रथम सत्संग तत्पश्चात् पाठ साहब के भोग आरती आदि का कार्यक्रम हुआ।

अब समय था संतों के दर्शन का। प्रतिदिन की भांति संत मण्डली का आगमन हुआ जिसें संतों को भण्डारा खिलाया गया। यह कार्यक्रम करीब 9 बजे तक चला।

प्रातः 9 बजे महाराज श्री के निर्वाण दिवस संकीर्तन यात्रा निकाली गई जिसमें आगे–पीछे भक्त व संत वृन्द चल रहे थे जिसमें संत श्री रमेश लाल (हरिद्वार), संत मुरलीधर जी(खैरथल), संत मोनूराम (जयपुर), संत श्यामलाल जी (कोटा) आदि थे उ बाद सुंदर ढंग से सुसज्जित चौपहिया वाहन चल था जिसमें सद्‌गुरू सर्वानंद जी महाराज की मनमो प्रतिमा को विराजित किया गया था। तत्पश पीछे–पीछे सैंकड़ों की संख्या में प्रेमी चल रहे थे

राधे–राधे श्याम मिला दे, भज गोविन्दम मुकन्दम सर्वानंदम् हरे–हरे। टेऊँराम बाबा मेर आदि मधुर धुनियां लगाई जा रही थी। इतने संकीर्तन को सुनकर प्रेमीगण मुग्ध होकर हाथो करतल करते हुये नृत्य करने लगे। प्रेमीगण धीरे– इस मधुर संकीर्तन के प्रवाह में डुबकी लगाकर अ आप को कृतार्थ कर रहे थे। धीरे–धीरे धुनि का तीव्र हो गया और प्रेमियों का हृदय भी धीरे–धीरे आनंदमय धुनियों के श्रवण से मात गंगे की गो परम पावन हो उठा।

लगभग 2 घण्टे की महासंर्कीतन यात्रा समाप्ति दोपहर 11 बजे स्वामी सर्वानंद स्मृति घाट नं. 10 पर हुई। जहां पर पूर्व में ही हवन तैयारी पूरी हो चुकी थीं। संतों महात्माओं के सा में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहूतियाँ आहूत गयीं। यज्ञ की समाप्ति के बाद आरती व हवन की परिक्रमा लगाई गई। तत्पश्चात् झण्डा रोहण ध्वजा गीत गाया गया। फिर सभी श्रद्धालु व संत गंगा मैया की पावन गोद में स्नान करने तत्पश्चात् श्रद्धालु गंगा मैया का गुणगान करते अपने नगर को प्रस्थान करने लगे। इस उत्स जयपुर, बड़ौदा, खैरथल, कोटा, दिल्ली, हरि अजमेर आदि शहरों से सैंकड़ों श्रद्धालु भक्त आकर संत दर्शन व गंगा स्नान कर परम आनं प्राप्त किया।

–राजेश केसवानी, ज

अमरापुर समाचार दर्शन

दीपमाला, रंगोली, रक्षासूत्र बांधकर सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज का 96 वां जन्मोत्सव मनाया गया

जिस प्रकार प्रत्येक पुष्प की सुगंध होती है उसी प्रकार महापुरूषों की भी अपनी सुगंध है। उनकी अनोखी रहनी–सहनी, अद्भुत प्रकृति, मनमोहक स्नेह प्रेम, त्याग, तपस्या की ज्वलन्त प्रतिमूर्ति होते हैं। उनकी रहनी, सहनी, कहनी, बहनी, बिल्कुल भिन्न, संसार से न्यारी। ऐसे अनेक महापुरूष इस धरा धाम पर अवतार ले चुके हैं। सभी ने अपनी–अपनी सुगंध भरपूर बरसाई है।

इन्हीं महापुरूषों में एक थे– "सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज" के शिष्य प्रेम स्वरूप "सद्गुरू शांति प्रकाश जी महाराज" मानो प्रेम ही के अवतार हों। प्रेम सीखे तो उन्हीं से, क्या दीन क्या अनाथ, क्या गरीब क्या अमीर और तो और मूक प्राणियों से प्रेम।

हमारी लेखनी में इतनी शक्ति नहीं कि उनका वर्णन लिख सकें। ये तो सूर्य को दीपक दिखाने की बात हो जायेगी। फिर भी गुरू भक्ति को सूक्ष्म रूप से प्रकट कर सकते हैं। ऐसे युगपुरूष सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज का 96 वां जन्मोत्सव 18 अगस्त से 22 अगस्त तक बड़े श्रद्धा उल्लास, उमंग के साथ श्री गुरू तीर्थ स्थल अमरापुर स्थान सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में मनाया गया।

अमरापुर धाम– 18 अगस्त रविवार एकादशी की शुभ प्रातः वेला में प्रार्थना, सत्संग महाराज श्री के प्रवचन की कैसेट्स व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद्भगवत गीता पाठारम्भ व आरती के साथ स्वामी जी का 96 वां जन्मोत्सव का शुभारंभ हुआ।

सांयकाल 5 से 7 बजे भजन संध्या, महाराजश्री की महिमा का गुणगान, आरतियां, प्रसादी वितरण आदि का कार्यक्रम हुआ। इसी प्रकार पांच दिन तक प्रातः सांय सत्संग गंगा प्रवाहित हुई। प्रतिदिन श्रद्धालुगण पावन सत्सग गंगा में स्नान कर अपने जीवन को सार्थक बना रहे थे साथ ही इन दिनों में सद्गुरु महाराज के अमृत प्रवचनों को भी प्रेमियों ने ऑडियो कैसेट्स के माध्यम से श्रवण किया।

22 अगस्त रक्षाबन्धन, गुरूवार पूर्णिमा आदि का संयोग मिल जुलकर एकत्रित हुआ महाराज श्री का अवतरण दिवस कितना पावन शुभ अवसर। आज का दृश्य तो अनोखा था। महापुरूषों की दिव्य आभा सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। आज श्री दरबार की सुंदर सजावट की गई थी, मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही मनोहरकारी रंगोली देखकर मन गद्गद हो उठा। गुरूमुख द्वार से ज्यों ही सत्संग परिसर में प्रवेश हुआ तो हृदय उत्साहित हो उठा। सत्संग परिसर के मंच में अस्थायी प्रकोष्ठ बनाया गया था जिसमें नन्हीं–नन्हीं राखियों को सजाकर लघु आकार का मंदिर सजाया गया जिसमें आचार्य श्री, भगवान लक्ष्मीनारायण, सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज, सद्गुरू शांति प्रकाश जी महाराज, सद्गुरू हरिदासराम जी महाराज की मनमोहित प्रतिमा रखी गई थी।

वहीं सत्संग परिसर की दूसरी तरफ एक बड़ा काष्ठ का मंच बनाया गया जिसमें आचार्य श्री, सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी, स्वामी शांति प्रकाश जी की विशालकाय तैलीय, मनमोहित प्रतिमा को आसीन कराया गया था उस पर लगी पुष्पों की माला देखकर मानो ऐसा लग रहा था कि भगवान शंकर के साथ गंगा जी सुशोभायमान हो रही है। वहीं नीचे गुलाब, गेंदे व अन्य पुष्पों की पत्तियों को सजाकर मनोहरकारी सजावट की गई और अन्त में उसके नीचे 96 दीप लगाये गये इसके साथ श्री दरबार के श्री मंदिर में श्री विग्रह को नूतन परिधान पहनाये गये। नीचे समाधि स्थल में पुष्पों की आकर्षक सजावट की गई

जिसे देखकर प्रेमियों का हृदय आनंदित हो उठा।

प्रातःकाल सभी भक्तगण गुरूदर्शन को आतुर हो रहे थे। सभी ''रक्षासूत्र'' के लिए गुरूस्थल पर गुरू प्रतिमाओं को रक्षा सूत्र बांध रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे कि हे गुरूदेव! सदैव हमारी रक्षा करना, दुःख, सुख में सदैव हमारे हमराही बनकर हमें पार करना, इसी प्रकार की प्रार्थना लिये कतारबद्ध दर्शन कर मन प्रसन्न कर रहे थे।

प्रातःकाल 7 बजे ''आशवन्दी गुरू तो दरि आई'' प्रार्थना के साथ जन्म दिवस आरंभ हुआ। सर्वप्रथम पुजारी प्रताप राय जी, संत हीरानंद जी, स्वामी स्वयं प्रकाश जी एवं संत मोनूराम जी ने सत्संग में बताया कि–

कितना पावन दिवस है, अनोखा संगम है गुरूदेव का जन्म दिवस, सत्यनारायण, गुरूवार एवं रक्षाबंधन का दिन है। ''महाराज श्री'' में अनेक गुण विद्यमान थे। साधारण जन से ही प्रेम नहीं था बल्कि मूक प्राणी के प्रति भी प्रेम भरा था। एकादशी व्रत, संतदर्शन, गौरक्षा और परोपकार कार्य में सदैव अग्रसर रहते थे।

''जन्म ॾींहु जोॻीअ जो मनायो
देह धरे धरतीअ ते स्वामी शांति प्रकाश आ आयो..........''
''उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्''

सभी से उदारचित्त व्यवहार करते थे सभी को अपने घर परिवार का सदस्य समझते थे पूरा जीवन सेवा, परोपकार, मानव सेवा, गौरक्षा, संत सेवा में व्यतीत किया। गुरू भक्ति का भी जगह–जगह प्रचार कर गुरू का यश चहुँ ओर फैलाया।

प्रवचनों के पश्चात् पाठसाइब का भोग डाला गया और फिर सभी संतगण भी गुरू महाराज की प्रतिमाओं को रक्षा सूत्र बंधन के लिये आगे आये और उनके पीछे–पीछे श्रद्धालुगण कतारबद्ध होकर रक्षासूत्र बांधने के लिये खड़े हो गये। सभी ने महाराज श्री को रक्षासूत्र बांधे।

तत्पश्चात् अंत में गुरू प्रार्थनाष्टक व आरती की गई। फिर पूज्य महाराज श्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 96 दीप प्रज्जलित किये गये और संतगणों ने महाराज श्री के जन्मोत्सव पर बधाई गीत ''वाधायूं–वाधायूं लख–लख वाधायूं'' जैसे ही गाया प्रेमीगण भाव विभोर होकर नृत्य करने लगे। सभी प्रेमीगण गुरूमहाराज के जन्मोत्सव के बधाई गीत में व्यस्त हो गये कि समय का भान ही न रहा। अंत में 11 बजे आम भण्डारा हुआ और हजारों श्रद्धालुओं ने पावन प्रसाद ग्रहण किया वैसे तो सत्संग प्रवचन 11 बजे खत्म हो गया पर गुरू महाराज की प्रतिमाओं को रक्षासूत्र बांधने की कतार दिन भर लगी रही।

सायंकाल श्री दरबार में पुनः भजन संध्या हुई जिसमें सद्गुरू शांतिप्रकाश जी महाराज के गुणों का बखान किया गया और अंत में श्री दरबार के सम्पूर्ण परिसर में 96 दीप प्रज्जवलित कर गुरू महाराज के जन्मोत्सव की समाप्ति प्रकाशोत्सव के साथ की गयी।

–गुड़िया प्रेमप्रकाशी, जयपुर

सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि सम्पन्न

त्याग तपस्या तेज पुनि, गुरू भक्ति अभिराम।
निर्भयता का नाद बजाया, सद्गुरू हरिदास राम।।

हमारे भारतवर्ष की पावन भूमि पर संत महापुरूषों का कभी अभाव नहीं रहा। संत महात्मा समय–समय पर लोक कल्याणार्थ अवतार धारण करते हैं और परमात्मा की भक्ति करते हुये भूले भटके जीवों को सत्कर्म व धर्मकर्म करने के लये प्रेरित करते हैं। उन महापुरूषों की जीवन जीने की कला भी अपनी होती है। उनकी रहनी–सहनी–कहनी बहनी बिल्कुल भिन्न। उसे समझ पाना बड़ा मुश्किल होता है। लगते तो साधारण हैं पर सर्वगुण सम्पन्न होते हैं। अल्प आयु कालतक संसार में विचरण करते हुये लोगों को परमात्म तत्व का संदेश

सुनाकर पुनः अपने परमधाम को गमन कर जाते हैं। उनके द्वारा बताई शिक्षायें हमारे दिलो–दिमाग में दिग–दिगान्तर तक कायम रहती है और सदैव जीवन का मार्गप्रशस्त करते रहते हैं।

इसी प्रकार सरलता सादगी मर्यादा की साक्षात मूर्ति सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज थे जिन्होनें जीवन भर "आचार्य श्री" की उपासना की। आचार्य श्री द्वारा बताये गये मंत्र "सत्नाम साक्षी" पर विशेष जोर देकर इस महामंत्र को जन–जन तक पहुंचाया।

ऐसे ही त्याग, तपोमय मर्यादामूर्ति सद्गुरू हरिदासराम जी महाराज की द्वितीय पुण्य तिथि पावन श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में 30 अगस्त से 3 सितंबर तक सादगी व प्रेमपूर्वक सम्पन्न की गई।

पुण्यतिथि के प्रथम दिन यानि 30 अगस्त को नित्य प्रार्थना के पश्चात् श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद्भगवत गीता के पाठ रख कर शुरूआत की गई। पुण्यतिथि के अंतर्गत 30 अगस्त से 2 सितम्बर तक प्रातःकालीन व सायंकालीन सत्संग गंगा हुई जिसमें पूज्य महाराज श्री के गुणों का बखान व उनके अमृत प्रवचनों का कैसेट्स चलाया गया। इसी के अंतर्गत शनिवार 31 अगस्त को जन्माष्टमी महोत्सव भी हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस पंचदिवसीय सत्संग गंगा में प्रेमी आकर अपने को कृतार्थ कर रहे थे।

3 सितम्बर मंगलवार आज त्याग व सादगी की मूर्ति सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पुण्यतिथि का दिन था। प्रातःकालीन प्रार्थना से पूरा सत्संग व बाहरी परिसर गुंजायमान हो रहा था। प्रेमीगण अतिशीघ्र ही सत्संग परिसर में आने लगे। गुरू दरबार पीत वर्ण के शामियाने से पीताम्बरी लग रही थी। वही सत्संग मंच "महाराज श्री" की प्रतिमाओं व उपस्थित संतगण से शोभायमान हो रहा था।

प्रार्थना के पश्चात् सत्संग गंगा शुरू हुई जिसमें स्वामी हरिदासराम जी महाराज के गुणों का गुणगान किया गया। संतों ने अमृत प्रवचन में बताया कि–

यदि हम अपने जीवन में विचार करें तो पायेंगे कि महापुरूषों में अनंत गुण हैं जिनकी गिनती असंभव है हम वृक्ष के पत्ते व लतायें गिन सकते हैं पर संतों के गुणों को गिनना असंभव है। संतों में सादगी, श्रद्धा, विनम्रता जैसे अनेक गुण हैं जिनका यदि बखान किया जाये तो पृष्ठ कम पड़ जायेंगे। उनके शब्द गूढ़ होते हैं। वह स्वार्थ छोड़कर सबको समान दृष्टि से देखते हैं। संसार के स्वार्थ में संत नहीं फंसते हैं। वह तो स्वार्थ में फंसे लोगों को इस संसार सागर से पार कर देते हैं।

रहनी, सहनी, बहनी और कहनी ये चारों गुण तो सभी संत महात्माओं में होते हैं, पर सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज में इनके अलावा भी कई गुण थे। वह हमेशा सादे वस्त्र पहनते थे उनके वस्त्रों को देखकर ऐसा नहीं लगता था कि वह इतने बड़े पंथ के महा–मंडलेश्वर हैं। उनके विचार भी उच्च थे। उन्होंने अपने प्रवचनों में हमेशा आचार्य की उपासना पर जोर दिया। वह कहते थे कि आचार्य की पूजा करने से सभी संतों व भगवान की पूजा हो जाती है। उनकी आचार्य श्री के प्रति भक्ति अटल थी। हम यदि उनके जीवन से एक भी शिक्षा ग्रहण कर लें तो हम इस संसार रूपी सागर से पार हो सकते हैं।

संतों के प्रवचनों के पश्चात् स्वामी जी के अमृत प्रवचनों का कैसेट्स चलाया गया। तत्पश्चात् पाठों के भोग व आरती करके इस वर्सी उत्सव की समाप्ति की गई। अंत में आम भण्डारा हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रेमपूर्वक प्रसाद ग्रहण किया।

इस वर्सी उत्सव में संत हीरानंद, संत मोनूराम जी, संत नानकराम, संत रामानंद, भगत भोजराज, भगत मूलचंद, भगत प्रतापराय आदि वृन्द व भगत मण्डलियों ने भाग लिया। इसी के साथ अजमेर, गोंदिया, खैरथल, जोधपुर, चाकसू, चौमू, सीकर आदि शहर के श्रद्धालुजन इस वर्सी उत्सव में सम्मिलित हुये।

–गुड़िया प्रेम प्रकाशी, जयपुर

अमरापुर समाचार दर्शन

आचार्य श्री व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव पर श्रद्धालु उमड़े

लड्डू गोपाल की झूला झांकी व बर्फ झांकी सजी

कृष्ण, प्रकृति का वह तत्व है जो सबको अपनी ओर खींचता है, आकृष्ट करता है सबको अपने आकर्षण में ऐसा बांधता है कि चर–अचर, जड़–चेतन और सजीव–निर्जीव उसके मोहपाश में ऐसा बंधते हैं कि जन्म जन्मातर तक कैदी होकर रह जाते हैं। यानि बांधकर रखने में माहिर हैं श्री कृष्ण भगवान।

फिर भी आश्चर्य देखिये कि वह मुक्ति दाता भी है। बंधनाशक, यानि बंधन को तोड़ने वाले भी यानि बांधे भी कृष्ण और खोले भी कृष्ण। वे अगर चाहे तो एक छोटी सी डोर में बांध दें, अगर न चाहें तो लोहे की श्रृंखला भी नहीं बांध सकती । यानि मर्जी के मालिक, त्रिलोक के स्वामी हैं कृष्ण।

खास बातें

1. मुख्यद्वार पर आकर्षक रंगोली।
2. 51 बर्फ की सिल्लियों द्वारा मनोहरकारी भगवान भोलेनाथ की झांकी।
3. लड्डू गोपाल की झांकी।
4. रात्रि 12 बजे झूला झांकी।
5. अनेक नन्हे मुन्ने बच्चे कृष्ण की वेशभूषा में श्री दरबार में आये।

ऐसे ही लीलाधारी भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव 25 अगस्त से 31 अगस्त तक महाआनंद के साथ मनाया गया। इस सप्त दिवसीय जन्मोत्सव में प्रेमीगण निरंतर भाव से आकर ज्ञान गंगा को लूट रहे थे। आइये हम भी लेखनी के माध्यम से इस आनंदोत्सव का पान करें।

भक्त वत्सल भगवान, राधा के प्राण भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष में 25 अगस्त रविवार के दिन श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ, श्रीमदभगवत गीता व श्रीमद्भागवत के सप्तदिवसीय पाठों का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात् सत्संग की शुरूआत हुई।

26 अगस्त से 30 अगस्त तक भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के कारण सत्संग का समय प्रातः 7 से 9 बजे तक कर दिया गया। प्रतिदिन संतों द्वारा भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का नित्य रसपान कराया जा रहा था और प्रेमीगण भी अत्याधिक संख्या में आकर इस जन्मोत्सव का आनंद उठा रहे थे। इसी प्रकार शाम को भी भजन संध्या होती थी।

31 अगस्तः– आज नंद के लाला, मुरलीधर भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के साथ आचार्य श्री टेऊँराम जी के पावन अवतरण का दिवस था कितना अनूठा संगम था। गुरू और ईश्वर दोनों के जन्मोत्सव का आनंद उठाने के लिये प्रेमीगण बड़ी संख्या में दरबार में एकत्रित होने लगे। आज श्री दरबार में मनोहरकारी सजावट की गई थी। पूरा सत्संग परिसर भगवान सूर्य की किरणों से ढककर पीताम्बरी हो रहा था।

सत्संग परिसर के मध्य में लीलाधारी श्री कृष्ण, आचार्य श्री, सद्गुरू सर्वानंद जी, सद्गुरु शांति प्रकाश जी व सद्गुरू हरिदासराम जी महाराज की हृदयस्पर्शी प्रतिमा विराजित की गई। फूलों की मधुरकारी सजावट एक प्रकोष्ठ का निर्माण कर रही थी। वहीं सत्संग मंच के बांयी तरफ लड्डू गोपाल के विविध छवियों की झांकी सजाई गई। चारों तरफ श्री कृष्ण ही श्री कृष्ण नजर आ रहे थे। प्रेमीगण यह दृश्य देखकर आनन्दित हो श्री कृष्ण की जय–जयकार मना रहे थे। वहीं नीचे समाधि स्थल पर पुष्पों की सजावट व श्री मंदिर की भी सजावट कम नहीं थी।

वहीं बाहर श्री दरबार के बाहरी परिसर में श्री अमरापुरेश्वर महादेव मंदिर के बाहर रंग बिरंगी 51 बर्फ की शिलाओं द्वारा मन मोहित शिवलिंग बनाया

गया, उस शिवलिंग में आचार्य श्री की मूर्ति को विराजित किया गया था। इसको देखकर लग रहा था कि मानो आज सम्पूर्ण कैलाश पर्वत श्री अमरापुर धरा धाम पर उतर आया हो।

प्रातः 7 बजे प्रार्थना के स्वर के साथ इस भक्तिमय जन्मोत्सव की शुरूआत हुई। संतों द्वारा भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का गुणगाान किया गया। उन्होंने अपने प्रवचन में बताया कि भगवान श्री कृष्ण ने इस धरती पर अवतार लेकर अधर्म का नाश किया। सत्संग की समाप्ति के पश्चात् शुरू हुआ हवन का कार्यक्रम। संतों व श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर हवन की शुरूआत की, लगभग एक घण्टे के पश्चात् हवन की समाप्ति करके आरती व गुरू प्रार्थनाष्टक का जाप किया गया।

तत्पश्चात् शुरू हुआ मधुर धुनियों का स्वर जिसमें प्रेमीगण तल्लीन होकर नृत्य करने लगे। आखिर शिवोहम की धुनि लगाकर जन्मोत्सव की समाप्ति हुई।

सांयकालीन 5 बजे से पुनः भक्ति सरोवर शुरू हुआ जिसमें डुबकी लगाने के लिये श्रद्धालुगण श्री श्री दरबार में आने लगे। सभी संतो–वृन्दों भगत मण्डलियों द्वारा भगवान श्री कृष्ण की महिमा का वर्णन किया गया। रात्रि 8 बजे संतों द्वारा पाठ साहब का भोग डाला गया और सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप किया गया फिर शुरू हुआ महासंकीर्तन

राधे–राधे श्याम मिला दे
मन मोह लिया मुरली वाले ने

आदि मधुर संकीर्तन की धुनियां लगाई गईं। इतनी मधुर धुनि सुनकर प्रेमीगण भाव–विभोर होकर हाथों से करतल व नृत्यों में मस्त हो गये। प्रेमियों को समय का भान ही न रहा पर समय तो अविरल गति से बढ़ता जा रहा था। आखिर 9 बजे शिवोहम का उच्चारण कर संकीर्तन की समाप्ति हुई।

वैसे तो यह भक्तिमय संध्या रात्रि 9 बजे ही समाप्त हो गई पर रात्रि 12 बजे तक झांकियों का मनोहरकारी दर्शन करने के लिये प्रेमियों की कतारें आना जारी थीं। रात्रि 12 बजे भगवान की सुन्दर झूला झांकी सजाई गई जिसमें भगवान लड्डू गोपाल को सुंदर ढंग से सुसज्जित कर झूले में बिठाया गया। लड्डू गोपाल को नूतन वस्त्राभूषण से अलंकृत कराया गया था।

नंद के आनंद भयो, जय कन्हैयालाल की, हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैयालाल की के मधुर उद्घोष के साथ श्री कृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया। खीर की प्रसादी का भोग लगाकर श्रद्धालुओं को वितरित किया गया। लगभग रात्रि 1 बजे तक श्रद्धालुओं ने "श्री दरबार" में श्री हरि के जन्मोत्सव की खुशियाँ मनाई।

—सुनीता केसवानी, जयपुर

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

22 सितम्बर रविवार से समय सारणी में परिवर्तन
श्री अमरापुर स्थान की सत्संग समय सारणी

प्रार्थना–सत्संग–धुनि

प्रातः 7 से 8:20 बजे तक

भजनसंध्या–सत्संग

सांयः 4:30 से 6 बजे तक

आरती

सांय : 6 से 6:20 बजे तक

प्रत्येक रविवार

प्रार्थना सत्संग–प्रवचन कैसेट

प्रातः 7 से 9:30 बजे

भजनसंध्या–आरती

सांयः 4:30 बजे से 6:30 तक

विशेष

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार सांयकाल भजन–सत्संग–आरती व समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी का दर्शन करें।

नोट :–दोपहर 12 से 3 व रात्रि 9 से प्रातः 6 तक श्री मन्दिर व "मुख्यद्वार" बन्द रहेगा।

प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में 21 दिवसीय विभिन्न महोत्सव सम्पन्न

बड़ौदा–प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में पूर्व वर्ष की भांति इसी वर्ष भी दिनांक 11.08.02 से 31.08.02 तक 21 दिवसीय विभिन्न मंगल उत्सव पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुए:–

सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज का 25 वां वर्सी उत्सव

परम्परागत रूप से प्रति वर्ष यहां आश्रम पर पूज्य सद्गुरू सर्वानंद जी महाराज की 25वीं पुण्य तिथि दिनांक 11.08.02 से 15.08.02 तक बड़े श्रद्धा व उत्साह से मनाई गई। इसी उपलक्ष में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद भगवत गीता के पाठ भी रखे गये। पांचों दिन सुबह शाम गुरू महाराज जी के त्यागमयी जीवन पर पूज्य सन्तों द्वारा प्रकाश डाला गया। 15.08.02 को गुरू महाराज जी की पुण्य स्मृति में ब्रह्मभोज भी रखा गया। प्रातः पाठों का भोग व सत्संग प्रवचन के बाद पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया।

स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज का 11 वां वर्सी उत्सव

पूज्य स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज का 11 वां पुण्य तिथि उत्सव 15.08.02 से 19.08.02 तक बड़े ही श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। पांचों दिन सुबह शाम पूज्य स्वामी जी के जीवन चरित्र पर उनके रचित भजनों को गाकर स्वामी जी का स्मरण किया गया। स्वामी जी की पुण्य स्मृति में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमदभगवत गीता के पाठ भी रखे गये। विशेष कार्यक्रम 16.08.02 को पवित्र नर्मदा स्नान यात्रा का रहा। इस विशाल यात्रा में 37 लक्जरी बसें व अन्य निजी वाहनों द्वारा चाणोद के लिये प्रस्थान किया गया जहां पर पूज्य स्वामी धर्मप्रकाश जी को जल समाधि प्रदान की गई थी।

चाणोद में भी विशाल सत्संग व संत दर्शन का आयोजन किया गया था। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान कर संतों का दर्शन कर सत्संग का लाभ लिया। अंत में पल्लव पाकर चाणोद यात्रा को विराम दिया गया।

पूज्य स्वामी जी की पुण्य स्मृति में विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा कन्या भोज का आयोजन भी हुआ जिसमें नगर की असंख्य कन्याओं ने प्रसाद ग्रहण किया। 19.08.02 को बाबा परसराम जी के भजन कीर्तन का भी आयोजन हुआ। 18.08.02 को थल्हे वाले महापुरूष के भी भजन सत्संग का आयोजन रहा।

सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज का 96 वां जन्मोत्सव

युग पुरूष अनंत श्री विभूषित सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज का 96 वां जन्मोत्सव पूरे विश्व के साथ–साथ यहां पर भी दिव्य रूप से दिनांक 19.08.02 से 22.08.02 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व गीता भगवती के पाठ भी रखे गये। चारों दिन गुरू महाराज द्वारा रचित वाणी के भजनों द्वारा पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी व संतों द्वारा पूज्य गुरू महाराज को स्मरण किया गया। इस शुभ अवसर पर फरीदाबाद से संत किशोर लाल जी भी उपस्थित थे। 22.08.02 को सांयकाल विशेष कार्यक्रम में गुरू महाराज जी का जन्मोत्सव मनाया गया। अंत में पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव

आनंदकंद भगवान श्री कृष्णचन्द का पावन जन्माष्टमी उत्सव 22.08.02 से 31.08.02 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ, गीता व श्रीमद भगवत महापुराण के पाठ भी रखे गये। पूरा सप्ताह भगवान की मधुर लीलाओं का रस, रसिक प्रेमियों ने संतों के श्रीमुख से लिया। रोज नये–नये भजन व लीलाओं को श्रवण कर प्रेमी परम रस का अनुभव करने लगे।

प्रस्तुति–प्रेम प्रकाश आश्रम, बड़ौदा

जन्मोत्सव के महाआनंदमयी प्रकाश से आलोकित हो उठी धरा

पूरे उत्साह उमंग व श्रद्धापूर्वक मनाया गया सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का पावन जन्म महोत्सव

इस युग की महान विभूति अनंतश्री विभूषित श्री कृष्णस्वरूप युगपुरुष सद्गुरु शातिप्रकाश जी महाराज का 96 वाँ जन्मोत्सव व 10 वीं पुण्यतिथि समारोह देश–विदेश में बड़े हर्षोल्लास व उमंग से मनाया गया।

उल्हासनगर–पूज्य महाराज श्री के जन्मोत्सव का विशेष कार्यक्रम प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर–5 में सम्पन्न हुआ दिनांक 21–8–02 से 24–8–02 तक आयोजित समारोह में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व गीतामाता के पाठ रखे गये। सुबह शाम पूज्य गुरुदेव के विशाल जीवन चरित्र पर अनेक संत- महात्माओं, व गुणीजनों कलाकारों द्वारा अपने भजनों व प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर पूज्य महाराज श्री के पावन स्मृति मंदिर को विशेष लाईटिंग व फूलों से सजाया गया था। जहाँ हजारों लोगों ने मथा टेककर गुरु महाराज को श्रद्धासुमन भेंट किये। 22–8–02 को विशेष कार्यक्रम में जनता जनार्दन परिषद द्वारा पूज्य महाराज श्री को पुष्पांजलि भेंट की गयी, इस अवसर पर अनेक सामाजिक व राजनैतिक, धार्मिक संस्थाओं व गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पूज्य गुरुदेव भगवान को अपने–अपने भावों द्वारा श्रद्धा सुमन भेंट किये गये। पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के संयोजन में गुरुदेव जी के विशाल व व्यापक जीवन दर्शन पर सरल रूप में प्रकाश डाला गया। इस पंचदिवसीय महोत्सव में पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज, स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज, स्वामी अनंत प्रकाश जी महाराज, स्वामी वेदप्रकाश जी, संत दयाप्रकाश जी, संत रमेश प्रकाशजी, संत शंकरानंद जी, संत श्यामलाल, संत बुधरप्रकाश जी, संत किशोरलाल जी, संत ब्रह्मदास जी, संत आत्माराम जी, संत चेतनकृष्ण जी, व अन्य मठों व सम्प्रदायों के संत महात्मा बड़े श्रद्धा के साथ शामिल हुये। देश विदेश से असंख्य प्रेमियों ने सम्मिलित होकर गुरु महाराज जी का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर अनेक सामाजिक कार्यकर्ता व अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी भाग लिया।

दिनांक 24–8–02 को गुरु महाराज जी के पुण्यस्मृति में संत समागम व विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में संतो महात्माओं व सद्गृहस्थों ने भण्डारे में प्रसाद ग्रहण किया। सांय पल्लव पाकर इस भव्य समारोह का समापन किया गया। इसी प्रकार सद्गुरु महाराज के प्रकटोत्सव के आनन्दातिरेक की गूंज चहुं ओर थी। **अहमदाबाद** व **नवसारी** में शोभायात्रा, **सूरत** में प्रभातफेरी के विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ सत्संगानन्द की मौज में हजारों प्रेमियों ने गुरुदेव का पावन जन्मोत्सव मनाया। **राजकोट, जामनगर, जलगाँव, रावेर, बुरहानपुर, पिम्परी, पूना, कोल्हापुर, गोन्दिया में हवन, रायपुर, भाटापारा, नागपुर, भोपाल, जबलपुर, सिवनी, बालाघाट, डबरा, मुरैना, ग्वालियर में सभजो सांई फिल्म का प्रदर्शन, दतिया, आगरा, लखनऊ, वाराणसी, कानपुर, फैजाबाद, अलीगढ़, पलवल, फरीदाबाद, हिसार, राजपुरा, दिल्ली, जोधपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, टौंक, बड़ौदा, में** हजारों–हजारों प्रेमी सद्गुरु महाराज के जन्मोत्सव के दिव्य आनन्द से ओतप्रोत रहे। विदेशों में **लासपालमास (स्पेन)** में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में वहां के प्रेमियों ने जन्मोत्सव का परम आनन्द प्राप्त किया। स्पेन के विभिन्न नगरों से व अमेरिका से भी प्रेमी इसमें सम्मिलित हुए। **जकारता (इण्डोनेशिया)** में सन्त राजूराम जी के सानिध्य में प्रेमियों ने गुरुदेव भगवान के जन्मोत्सव का पुण्य लूटा।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

15 से 27 सितम्बर	2002 तक	दुबई	☎	0097143-531420
28 सितम्बर से 1 अक्टूबर	2002 तक	जयपुर	☎	0141-372423, 372424
2 से 5 अक्टूबर	2002 तक	ब्यावर	☎	01462-50508
6 अक्टूबर	2002	जयपुर	☎	0141-372423, 372424
7 से 21 अक्टूबर	2002 तक	हरिद्वार	☎	0133-460144, 460815
22 से 23 अक्टूबर	2002 तक	पिनगंवा	☎	011268-74371, 74226

तीज-त्यौहार

20	सितम्बर 2002	शुक्रवार	अनन्त चर्तुदशी
21	सितम्बर 2002	शनिवार	श्री सत्यनारायण व्रत, श्राद्धपक्ष शुरू
25	सितम्बर 2002	बुधवार	श्री गणेश चौथ व्रत
02	अक्टूबर 2002	बुधवार	इन्दिरा एकादशी व्रत, महात्मा गांधी जयन्ती
06	अक्टूबर 2002	रविवार	सर्वपितृवती अमावस्या
07	अक्टूबर 2002	सोमवार	नवरात्रा व्रत उत्सव शुरू
08	अक्टूबर 2002	मंगलवार	चन्द्रदर्शन
12	अक्टूबर 2002	शनिवार	चौथ, सद्गुरु टेऊंराम जन्मदिन (मासिक)
13	अक्टूबर 2002	रविवार	श्री दुर्गाष्टमी
14	अक्टूबर 2002	सोमवार	श्री दुर्गानवमी
15	अक्टूबर 2002	मंगलवार	दशहरा विजयादशमी (सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव हरिद्वार में शुरू)
16	अक्टूबर 2002	बुधवार	पापांकुशा एकादशी
17	अक्टूबर 2002	गुरुवार	कार्तिक संक्रान्ति
20	अक्टूबर 2002	रविवार	शरदपूर्णिमा
21	अक्टूबर 2002	सोमवार	श्री सत्यनारायण व्रत
25	अक्टूबर 2002	शुक्रवार	श्री गणेश चौथ व्रत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का स्वदेश पहुंचने पर भव्य स्वागत

नई दिल्ली 11 सितम्बर 2002। आज अर्धरात्रि को श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का स्वदेश वापिसी पर नई दिल्ली के इन्दिरागांधी अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल पर दिल्ली, जयपुर, कोटा, अजमेर, पलवल, भोपाल, ग्वालियर मुरैना इत्यादि स्थानों से आए सैकड़ों प्रेमियों द्वारा सत्गुरु भगवान की गगनभेदी जयजयकार व पुष्पवर्षा के साथ भव्य स्वागत किया गया, हवाई अड्डे से ही पूज्य स्वामी जी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान जयपुर के लिये सड़क मार्ग द्वारा रवाना हो गये। ज्ञातव्य हो पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली ने 75 दिवसीय विदेश यात्रा के अन्तर्गत अमेरिका, स्पेन इत्यादि देशों के विभिन्न नगरों में सनातन संस्कृति व सद्गुरु टेऊँराम महाराज के उपदेशों का प्रचार प्रसार करते हुए हजारों प्रेमियों को भगवतराधन की और अग्रसर किया। स्वामी जी के साथ अमेरिका में स्वामी मनोहरप्रकाश जी, सन्त जयदेव जी, सन्त नामदेव जी, सन्त हरीओमप्रकाश जी व स्पेन यात्रा में सन्त जयदेव जी, सन्त नामदेव जी सन्त हरीओम प्रकाश जी, सन्त नरेश प्रेम प्रकाशी, सन्त नन्दलाल, प्रेम प्रकाशी सन्त परसराम प्रेम प्रकाशी, व सन्त लक्ष्मण प्रेमप्रकाशी सन्त मण्डली में सम्मिलित थे।

" साक्षी दर्शन "

अद्भुत इक इतिहास है, सुनिये देकर ध्यान ।
जांके श्रवण मनन से , साक्षी का हो ज्ञान ।।

संसार चक्र कब से चला,और कब तक चलेगा, कुछ मालूम नहीं। इस संसार मंच पर कई लोग आए और अपना - अपना नाटक दिखाकर चले गए। कई अभी आ रहे हैं, कई भविष्य में आयेंगे, और आते रहेंगे। यह सृष्टि चक्र चलता रहता है, और चलता रहेगा। कभी बंद होने वाला नहीं है। प्रत्येक मनुष्य इस संसार मंच पर अपनी- अपनी स्मृतियाँ छोड़ जाता है। कालान्तर में (समय पाकर) वे स्मृतियाँ ही आने वाली नई पीढ़ियों के लिए इतिहास बन जाती हैं। वे इतिहास ही देश, जाति और समाज के **उत्थान और पतन के कारण बताये गये हैं।**

इतिहास और पुराणों का अध्ययन और अनुशीलन (पढ़ी गई विषय का बार बार विचार करना) करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। जो लोग पुराणों एवं इतिहासों को न जानते हैं, न जानने का प्रयास ही करते हैं, वे गेंद की तरह कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी दाएं कभी बाएं धक्के खाते रहते हैं। पुराने इतिहास आज के मानव को अजीब से लगते हैं। आज के इतिहास भी भविष्य के मानव को अजीब से लगेंगे। इतिहासों में महाभारत सबसे बड़ा इतिहास है, इसे पाँचवां वेद भी कहते हैं। महाभारत के विषय में जनसाधारण के मन में यह भय एवं भ्रम डाला गया है कि जो कोई भी महाभारत पढ़ेगा या सुनेगा या घर में भी रखेगा तो उसके घर में झगड़े पैदा हो जायेंगे और सारा घर बर्बाद हो जायेगा। जिस महाभारत के विषय में हम सुन रहे हैं, वह महाभारत भगवान राम के समय में था ही नहीं। फिर भी राम के घर में इतना बड़ा भारी झगड़ा पैदा हो गया जो भगवान राम को भाई एवं पत्नि सीता सहित घर छोड़ कर वन को जाना पड़ा। राजा दशरथ जी को भी अपने प्राण त्यागने पड़े। कौरव एवं पाण्डव आपस में भाई- बन्धु ही थे, वहाँ भी झगड़ा पैदा हो गया ,जिस झगड़े ने महाभारी युद्ध का रूप धारण कर लिया, कहते हैं, उस युद्ध में ड़ेढ़ अरब से भी अधिक वीर सैनिक मारे गये थे। द्वारिकाधीश भगवान श्रीकृष्ण के सगे संबंधी छप्पन करोड़ यादव उस युद्धयज्ञ में स्वाहा हो गए थे। महाभारत की रचना तो बाद में महर्षि वेद व्यास जी ने की है। पुराने समय को छोड़कर जो समय चल रहा है हम उसे देखे और विचारें। आज घर - घर में लड़ाई झगड़े क्यों हो रहे है ? जबकि घर- घर में महाभारत नहीं है। यदि महाभारत ही झगड़ों की जड़ होती तो घर- घर में झगड़े नहीं होते। साधारण मनुष्य भी थोड़ा विचार करने से सच को समझ सकता है। मानना पड़ेगा कि महाभारत ही झगड़ों की जड़ नहीं है पर सुख शांति की जड़ है। केवल स्वार्थी एवं अविवेकी लोगों ने अपना मतलब सिद्ध करने के लिए यह भय एवं भ्रम का जाल बिछा रखा है। सच तो यह है कि वेद, पुराण, इतिहास, महाभारत, गीता और रामायण आदि आर्ष ग्रंथ (ऋषियों द्वारा लिखे गए) सचमुच ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं। जैसे कि मनुष्य का कर्तव्य क्या है ? नारी का कर्तव्य क्या है ? गुरु का कर्तव्य क्या है ? शिष्य का कर्तव्य क्या है ? नेता का कर्तव्य क्या है ? मुखिया एवं पंच का कर्तव्य क्या है ? गुरू किसको कहते हैं ? गुरु कब करना चाहिए और कौनसा करना चाहिए ? दान कब करना चाहिए ? दान किसको देना या लेना चाहिए ? सच्ची मेहनत के पैसों से दान करना चाहिए या मुफ्त के पैसों से या दान मिले हुए धन आदि पदार्थों का दान करना चाहिए ? कर्म , उपासना एवं ज्ञान तीनों अलग - अलग हैं या एक हैं ? मैं कौन हूँ ? संसार क्या है ? ब्रह्म क्या है ? माता - पिता, भाई - बहिन, पति - पत्नि आदि सारे परिवार का एक दूसरे के साथ क्या - क्या कर्तव्य हैं ? मूर्ति पूजा करनी चाहिए या नहीं ? मांस, मछली, अण्डे खाने चाहिए या नहीं ? तीर्थ करना चाहिए या नहीं ? गंगा जी में अस्थियां डालना चाहिए या नहीं ? कहने का मतलब तो सब प्रकार के ज्ञान सब नीतियां, शास्त्रों से निकलती हैं। जो कुछ ज्ञान का विकास हो चुका है या हो रहा है वह सब अभी तक तो न के बराबर है, इससे बहुत कुछ भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है। भोजन करना, कपड़े पहनना और पानी पीना भी इतना जरूरी नहीं है, जितना कि इतिहासों एवं पुराणों को पढ़ना। क्योंकि इतिहास एवं पुराण ये दो ज्ञान चक्षु बताये गए हैं। दो - दो आँखें प्रायः सभी मनुष्यों की होती हैं। जिसको एक आँख होती है उसको काना कहते हैं, जिसको दोनों आँखें नही होती उसे सूरदास कहते हैं। जिसको ज्ञान चक्षु हों उसे ज्ञानी कहते हैं। सूरदास फिर भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परन्तु ज्ञान चक्षुहीन मनुष्य अपने लक्ष्य पर कदापि नहीं पहुँच सकता। इसलिए इतिहास एवं पुराण पढ़ना कभी न भूलें। इतिहास एवं पुराण ही साक्षी का साक्षात्कार कराने में विशेष सहायक बतलाये गये हैं। साक्षी का साक्षात्कार सरलता से हो इस विषय में इस अद्भुत एवं शिक्षाप्रद इतिहास को ध्यान से सुनिये और पढ़िये। जिसको पढ़ने, सुनने एवं विचार करने से निश्चय ही साक्षी का **ज्ञान होगा जिससे परम् पद की प्राप्ति होगी।**

प्रेषक :— श्री सत्गुरु कृपा अमरापुर स्थान जयपुर
साभार " साक्षी दर्शन "रचयिता सत्गुरू स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज

डाक रजि. ग्वालियर संभाग- 161 (R.M.S. Posting Date-15) **प्रेम प्रकाश सन्देश** भा. शा. रजि. **29/18/81-II**

दो आँसुओं ने मन का मैल धो दिया।

मेरे पिता के चार भाई थे और उनके एक मामा भी उन्ही के साथ रहते थे, जिनका नाम था, बिहारीलाल। मै उन दिनों बहुत छोटा अवश्य था, परन्तु इतना समझता था कि प्यार क्या होता है और कटुता क्या होती है पहले तो मेरे पिता , तीनों चाचाओं और मामाओं में बहुत प्रेम बना रहा , सब एक मकान में रहते थे और सबका कारोबार भी एक ही साथ में होता था । फिर न जाने क्या बात हुई कि मेरे पिता की मृत्यु के पश्चात् मामा और भानजों में किसी प्रकार न बनी और मामा अर्थात मेरे बाबा मकान और गॉव को छोड़कर एक मील दूर दूसरे गॉव सरैया में जाकर बस गये और वहॉं जाकर उन्होने एक विधवा से विवाह भी कर लिया । पहले तो मेरे चाचाओं की उनसे दुश्मनी ही थी, किन्तु अब विधवा से विवाह कर लेने के करण घृणा भी हो गई। एक दूसरे के यहॉं तीज - त्यौहार और होली - दीवाली तक में कोई नहीं जाता था। कुछ लोगों ने आपस में मेल कराने का भी प्रयत्न किया किन्तु वह सब व्यर्थ गया।

गॉव में ताऊन की बीमारी आई और मेरी एक बुआ को उठा ले गई। बॉबा को किसी ने उनके मरने तक की खबर न दी। उसके पश्चात् मेरे सबसे छोटे चाचा द्वारिका सख्त बिमार पड़े। तीसरे ही दिन उन्होने चलाचली की तैयारी कर दी। प्रातः काल से ही वे ऑंखें फाड़ फाड़ कर सबको देखने लगे। मेरी चाची पछाड़ खा - खाकर उनके ऊपर गिरने लगी। धीरे - धीरे उनका बोल भी बन्द हो गया लोगों ने यह जानकर कि द्वारिका अब केवल घड़ी दो घड़ी के मेहमान है, उन्हे चारपाई से जमीन पर लिटा दिया किन्तु जमीन पर लेटे हुये उन्हें एक घंटा बीत गया और प्राण न निकल सके। वे ऑंखें फाड़ - फाड़ कर सबकी ओर ऐसे देखते रहे जैसे मानो उनकी ऑंखें किसी को खोज रही हों । लोगों ने घर के स्त्री - बच्चों को एक - एक करके उनके सामने किया , किन्तु फिर भी उन्हे शांति न मिली। अन्त में किसी ने बिहारी बाबा का नाम लिया आकर द्वारिका से पूछा - "क्या तुम अपने मामा को देखना चाहते हो?" मुहँ से बोल तो न निकला किन्तु मुख की मौन आकृति और ऑंखों ने जैसे उनके मन की बात कह दी हो । इस समय सारी दुश्मनी को भुला कर बाबा को लेने सरैया आदमी दौड़ाया गया। आधे ही घंटे में बाबा उपस्थित हो गये । सब पुकार उठे -" बिहारी आ गये, बिहारी आ गये।" बाबा आ कर चाचा के पास बैठ गये और सजल नेत्रों तथा रुँधे कण्ठ से कहने लगे - "द्वारिका ! मै आ गया हूँ। अपने मामा से एक बात तो कर लो ।" मै पास ही खड़ा यह सब कुछ देख रहा था। चाचा की पुतलियॉं फिरीं, मुख पर प्रसन्नता की आभा - सी आई , फिर उनकी ऑंखों ने दो ऑंसू ढलका दिये। चाचा की ऑंखें तो पहले से ही खुलीं थी, किन्तु अब होंठ भी खुल गये थे, जैसे वे होंठ कुछ कहना चाहते हों किन्तु वे खुले के खुले ही रह गये। अपने मामा के दर्शन करके चाचा चिर निद्रा में सो गये। इन दो ऑंसुओं ने चाचा और बाबा दोनों के ही मन का सारा मैल धो डाला।

संकलित



समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक ,रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है , कृपया उसे अच्छी तरह देखकर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहिले ही , अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

—व्यवस्थापक

RH 4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,

प्रकाशक :-श्रीचन्द पंजवानी द्वारा श्री प्रेम प्रकाश मण्ड़ल के लिए ओमनी कम्प्यूटर्स लाला का बाजार , फोन - 427502 से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट , दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानंद सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम ,गाढ़वे की गोठ , लश्कर,ग्वालियर प्रकाशित किया गया।)

संपादक :-शंकरलाल सबनानी , फोन - (327427), श्रीचन्द पंजवानी फोन-(454183)

सदस्यता क्रमांक